ओ३म्

पाक्षिक
परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५६ अंक - १५ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र अगस्त (प्रथम) २०१४

महर्षि दयानन्द सरस्वती

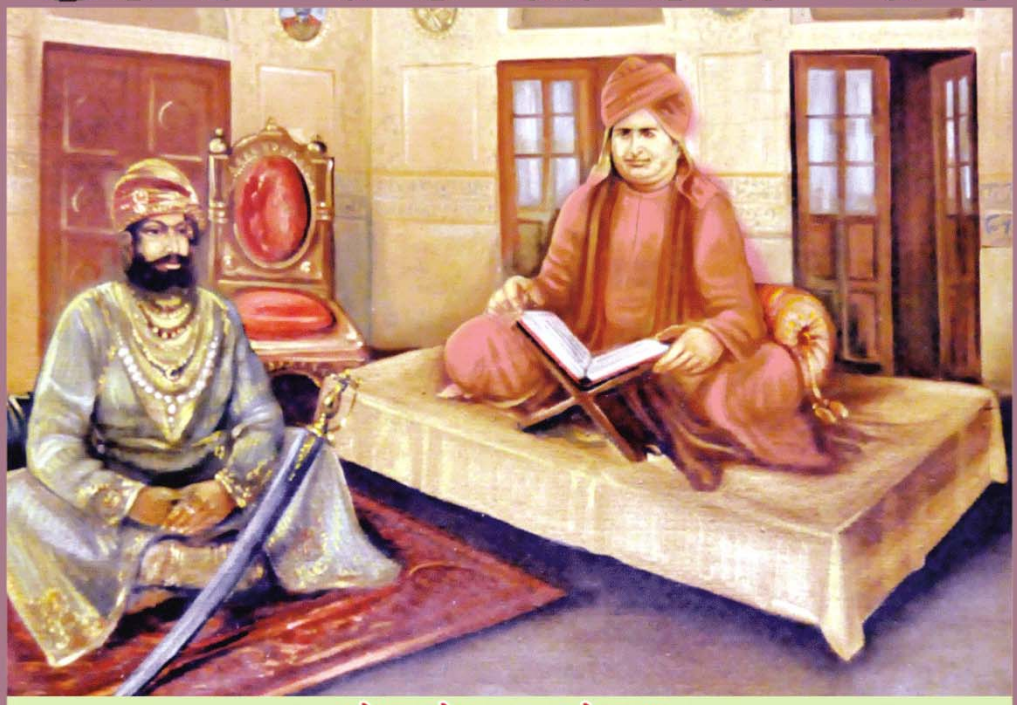

जोधपुर के महाराणा के साथ

शाहपुराधीश नाहर सिंह जी के साथ

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५६ अंक : १५
दयानन्दाब्द: १९०
विक्रम संवत्: श्रावण शुक्ल, २०७१
कलि संवत्: ५११५
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११५

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-
भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

अगस्त प्रथम २०१४

अनुक्रम

१. शंकराचार्य स्वरूपानन्द बधाई के पात्र	सम्पादकीय	०४
२. क्या श्रद्धा से ईश्वर मिल जाता है?	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	११
४. भूत.....फैशन का	रमेश मुनि	१९
५. ज्योतिष्टोम अग्निष्टोमाख्यस्य.....	सनत्कुमार:	२१
६. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		२४
७. वेद - मानव मात्र के लिए	सुधा सावन्त	२६
८. निर्भय कैसे बनें?	सुकामा आर्या	३०
९. जिज्ञासा समाधान-६८	आचार्य सोमदेव	३३
१०. पुस्तक - परिचय		३५
११. संस्था-समाचार		३८
१२. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

सम्पादकीय

शंकराचार्य स्वरूपानन्द बधाई के पात्र हैं

भारत के इतिहास में पूजा पद्धति का विशेष स्थान है। महाभारत काल के बाद भारतीय समाज में जो बड़े परिवर्तन हुए उनमें प्रमुख है पूजा पद्धति। वैदिक धर्म में एक ईश्वर एक गुरु एक धर्म ग्रन्थ इस देश की एकता का मूल आधार था। वेद के पठन-पाठन पर प्रतिबन्ध लगने से समाज में इस परम्परा का उच्छेद हो गया। धार्मिक ग्रन्थों में मिलावट की गई। अपनी इच्छानुसार नये-नये ग्रन्थों की रचना की गई। वेदाध्ययन पर प्रतिबन्ध लगाये जाने और ब्राह्मणों द्वारा मनमाने ढंग से ग्रन्थों की रचना कर लोगों को वैदिक धर्म से विमुख किया गया तब भारत में ब्राह्मणवाद के विरोध में बौद्ध, जैन, चार्वाक आदि धर्मों का उदय हुआ। इसी आधार पर भारतीय समाज में आस्तिक और नास्तिक सम्प्रदायों का प्रादुर्भाव हुआ। दोनों धारायें भारतीय परिवेश लिए थी, एक वेद और ईश्वर के विरोध में थी दूसरी वेद और ईश्वर के समर्थन में। दोनों में एक समानता थी- विरोधी भी ब्राह्मणों के वचन और आचार के आधार पर वेद का विरोध करते थे, वे ब्राह्मणों द्वारा किये अर्थों को ही वेदार्थ मान कर वेद के विरोध में लगे थे। इसी प्रकार मूल वैदिक धर्म वेद का पठन-पाठन समाप्त होने के कारण ब्राह्मण धर्म होकर रह गया था। जो ब्राह्मण लोग कहते थे वही वेद मान लिया जाता था। इस तरह वेद का ज्ञान इनको भी नहीं था, इस परिस्थिति का परिणाम हुआ कि विरोधियों ने वेद व ईश्वर का बहिष्कार कर दिया तथा वेद समर्थकों के धर्मग्रन्थ, भगवान और गुरु अनेक हो गये। वेद और वैदिक साहित्य के देवी-देवताओं को पृथक् ईश्वर मानकर उनकी मूर्तियाँ बनाई गईं उनकी पूजा चल पड़ी, उसको चलाने वाले अनेक सम्प्रदायों के आचार्य और गुरु लोग उत्पन्न हो गये। इसके समर्थन में यह परम्परा पुराण, उप पुराणों से होती हुई स्तोत्र, पूजा प्रकरण, रामचरित मानस से होती हुई हनुमान चालीसा तक पहुँच गई। इस परम्परा की विशेषता रही कि वैदिक परम्परा के देवी-देवता ही इनके आधार रहे, जो भी भगवान बनाये गये, कोई विष्णु का अवतार, तो कोई शिव का अवतार रहा। इन सबमें भगवान की पूजा, वैराग्य, परोपकार आदि धार्मिक भावों का महत्त्व रहा, उपासना में योग साधना, एकाग्रता, जप-तप की बातें जुड़ी रहीं।

इसके बाद मुसलमान और अंग्रेज इस देश में आये, ये धर्म विदेशी मूल के थे और सत्ता के साथ अपना धर्म भी इस देश में ले आये। अन्तर इतना था मुसलमान का मानना था कि इस्लाम के लिए सत्ता अनिवार्य है और अंग्रेज को सत्ता के लिये ईसाइयत की आवश्यकता थी। इस परतन्त्रता की अवधि में भारतीय मत-मतान्तरों, सम्प्रदायों के साथ इनका घालमेल जाने अनजाने होता रहा, परन्तु गत शताब्दी से योजनाबद्ध रूप से भारतीय समाज को पथभ्रष्ट करने का कार्यक्रम इस्लाम और ईसाइयत की संस्थाओं ने प्रारम्भ किया है। इनका उद्देश्य भारतीय संस्कृति के जो पूजनीय प्रतीक हैं, उनको समाप्त करना है। इसमें आज भारत में अधिकांश नये सम्प्रदाय ईसाइयत और इस्लाम से पोषित हैं। इसी क्रम में आज सांई बाबा, सहज योग, ब्रह्मा कुमारी जैसे संगठन छद्म तरीके से भारतीय विचारधारा और धार्मिक परम्पराओं को नष्ट करने में लगे हैं।

जब कोई व्यक्ति अपना मत या सम्प्रदाय चलाता है तो उसकी कोई मान्यता व विचार होता है जिसे व्यक्ति समाज में प्रचारित-प्रसारित करना चाहता है। ये विचार पुराने सम्प्रदाय में कोई संशोधन हो सकता है या किसी परम्परा का विरोध हो सकता है। सांई में दोनों में से कुछ भी नहीं है। जो सम्प्रदाय होते हैं उनकी विचारधारा किसी दार्शनिक विचार से जुड़ी होती है जिससे उसकी आचार पम्परा निर्धारित होती है। सांई के साथ ऐसा भी कुछ नहीं है। ईश्वर जैसा कुछ नहीं, वहाँ तो स्वयं सांई ही ईश्वर हो गया है। इस मान्यता में जो सबसे षड़यन्त्रपूर्ण तथ्य है, वह है सांई को पुराने देवी-देवता के साथ जोड़ना और ऐसा करते हुए सांई की प्रतिष्ठा को बढ़ाना और देवी-देवताओं को गौण बना देना। सांई के मानने वाले केवल सांई का नाम नहीं लेते वे- ओम् सांई बोलते, राम सांई या सांई राम बोलते हैं। यह भक्ति नहीं धूर्तता है। शिव, राम, विष्णु की प्रतिष्ठा कम दिखा कर जनता के मन में सांई की प्रतिष्ठा बढ़ाने का षड़यन्त्र मात्र है। इतना ही नहीं सांई के मन्दिरों में शिव, विष्णु, राम, कृष्ण आदि देवी-देवताओं की छोटी-छोटी प्रतिमा या चित्र लगाकर सांई को बड़ा सिद्ध करने का प्रयत्न किया जाता है। कहीं-कहीं पर सांई मन्दिरों में कुरान का पाठ भी किया जाता है। इसी प्रकार हिन्दू धर्म के प्रसिद्ध गायत्री मन्त्र में उलटफेर करके तन्नो सांई प्रचोदयात् ऐसा पाठ बोला जाता है, यह एक अनुचित और जनता को मूर्ख बनाने का प्रयास है। आप कह सकते हैं गायत्री के नाम पर समाज में अनेक सम्प्रदायों में इसी प्रकार की गायत्री रचना मिलती है। यह बात ठीक है परन्तु उचित नहीं है।

सांई एक विचार के लोगों का मत नहीं है, सांई एक योजनाबद्ध, व्यवस्थित रूप से बहुत तीव्रगति से फैलाई

गयी योजना है। धार्मिक विचारों में सांई मान्यता वाले लोगों का सांई मन्दिरों में विवाह कराया जाता है जिसके परिणामस्वरूप सांई की पूजा एक व्यक्ति की आस्था न होकर परिवार की आस्था बन जाती है। जो लोग हिन्दुओं के देवी-देवताओं में सांई को सम्मिलित करना चाहते हैं, उन्हें समझना होगा कि इस प्रकार की मान्यता से हिन्दू के हिन्दूपने पर चोट लगती है। सांई हिन्दू-मुसलमान दोनों के भगवान हैं तो जो सैद्धान्तिक मान्यता है वह समाप्त हो जायेगी। जो लोग सांई को हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रतीक मानते हैं उन्हें समझना चाहिए कि इस सांई की पूजा से हिन्दू तो इस्लाम की ओर झुक जाता है परन्तु सांई भक्त होने के कारण कोई मुसलमान हिन्दू विचारधारा से जुड़ा हो, इसका कोई उदाहरण आपको नहीं मिलेगा। जितने आजकल के नये इतर सम्प्रदाय हैं इनके मूल में ईसाइयत या इस्लाम का हाथ मिलेगा। सांई में इस्लाम का हाथ है, हिन्दू ईसाई या मुसलमान चमत्कार से प्रभावित होते हैं। ईसाई और मुसलमानों को उनके फादर या मौलाना बांध के रखते हैं परन्तु हिन्दू तो चमत्कार के साथ बह जाता है, उसे कोई भी अपने साथ ले जा सकता है। धार्मिक बन्धन के अभाव में हिन्दू हर पीर, फकीर, मजार, चर्च पर मन्नत मांगने चला जाता है, उसे लगता है कि समाधि पर मन्नत मांगने से पूरी हो सकती है तो मजार पर मन्नत मांगने से मन्नत पूरी क्यों नहीं हो सकती, इसीलिए दरगाह, मजारों पर हिन्दू महिलाओं की बड़ी भीड़ देखी जा सकती है। इस विचार को मानने की जो बड़ी हानि है वह है हिन्दू मान्यता व परम्पराओं का सरलता से त्याग।

ईसाई लोग हिन्दूओं को पथभ्रष्ट करने के लिए किस तरह के हथकण्डे अपनाते हैं, समाज में देखा जा सकता है। हिन्दुओं में सहज योग के नाम पर एक पाखण्ड चलता है इसकी संचालिका हिन्दू नाम निर्मला, बड़ी सी बिन्दी और हिन्दू परिवेश में रहकर योग का प्रचार करती थी, उसके योग में ईसा, मांसाहार जैसे उपाय योग को भ्रष्ट करके हिन्दुओं को ईसाइयत की ओर मोड़ने के काम ही आते थे। आज ईसाई ईसा और मरियम को भारतीय देवी-देवताओं के परिवेश और साजसज्जा में प्रस्तुत करते हैं। ये हिन्दुओं की भाँति पूजा, प्रसाद, मनोकामना सिद्धि की बातें करते हैं। इनके पादरी और प्रचारक लोग हिन्दू संन्यासियों की भाँति गेरवे कपड़े पहनकर गाँव में घर-घर जाकर वहाँ की महिलाओं को बहकाकर ईसाई बनाने का अभियान चला रहे हैं। पादरी बाइबिल को संहिता और वेद कहते हैं जो भारतीय परम्परा की अच्छी सूक्तियाँ हैं, उन्हें अपने प्रवचन में बाइबिल की बताकर प्रस्तुत करते हैं। हिन्दुओं की तरह नाम और वेश रखकर कैसे हिन्दुओं को बहकाते हैं उसका एक उदाहरण ईशा फाउण्डेशन है, इसके बाबा की पगड़ी देखकर लगता है कोई हिन्दू सन्त है, इसकी संस्था का नाम ईशा फाउण्डेशन भी हिन्दुओं से मिलता-जुलता लगता है। ये लोग यजुर्वेद के ईशावस्यम् मन्त्र के ईशा शब्द को अपने ईसा से जोड़कर हिन्दुओं को मूर्ख बनाते हैं। इस बाबा के दक्षिण के नगरों में बैंगलूर, चेन्नई, मुम्बई आदि में बड़े-बड़े विज्ञापन दिखाई देते हैं, कोई भी व्यक्ति प्रथम दृष्टि में इस बाबा को हिन्दू समझेगा परन्तु थोड़ा भी विचार करने पर पता चल जाता है, यह तो पाखण्ड है। ये ईसाइयत के प्रचार-प्रसार का साधन मात्र है। सांई बाबा का तन्त्र भी एक अच्छे व्यापार के साथ हिन्दुओं को भ्रष्ट करने का षड़यन्त्र है। मांसाहार आजकल सभी मत-पन्थों के लोगों में घर कर गया है परन्तु धार्मिक आचार-विचार में शाकाहार आज भी श्रेष्ठ समझा जाता है। आजकल के मत-सम्प्रदाय इस मान्यता को समाप्त करने में लगे हैं। स्वामी स्वरूपानन्द ने जो-जो तर्क दिये हैं, उनसे यही सिद्ध होता है कि सांई जैसे सम्प्रदाय हिन्दुओं की प्राचीन परम्परा को समाप्त करने के लिए ही प्रयासरत हैं। शंकराचार्य ने कहा है- सांई न तो अवतार है, न गुरु है अतः हिन्दू के लिए पूजा की श्रेणी में नहीं आता। मांसाहारी हिन्दू कोई कितना भी हो, देवी, भैरव पर बलि भी चढ़ाता हो परन्तु ओम्, शिव, राम, कृष्ण आदि को वह प्राणियों की रक्षा करने वाला, दयालु ही मानता है। किसी भी भारतीय परम्परा में अच्छा जीवन, आदर्श दिनचर्या, ऊँचे विचारों का सदा से स्थान रहा है।

अपनी दुकानदारी को सुरक्षित करने के लिए लोग एक शब्द की आड़ लेते हैं, उसका नाम है आस्था। लोग कहते हैं हमारी आस्था है। उमा भारती का मानना है कि जो लोग सांई में आस्था रखते हैं उनकी मनोकामना पूरी होती है अतः पूजा करना ठीक है। आश्चर्य होता है कि हजारों लोग केदारनाथ मनोकामना लेकर गये थे। उनकी सम्भवतः यही मनोकामना थी कि केदारनाथ उनको बाढ़ में बहा दे? किस पुजारी की मनोकामना थी या भगवान ने स्वयं बाढ़ में बह जाने की कामना की थी? यदि मनोकामना की पूर्ति सांई बाबा से या किसी अन्य बाबा से होती है तो अमरनाथ बाबा से या वैष्णों देवी माता से बड़ी समस्या नहीं तो कश्मीर समस्या ही हल करवा लेते। भगवान मनोकामना पूरी करता है तो क्या किसी भक्त ने देश की स्वतन्त्रता की कामना नहीं की थी। या ऐसी मनोकामना करे तो सांई या कोई भगवान पूरी कर सकता है क्या?

आस्था का बहाना बनाकर मूर्खता को महिमा मण्डित किया जाता है। लोग कहते हैं मानो तो भगवान नहीं मानो तो पत्थर। भगवान भक्त की मान्यता पर निर्भर करता है।

लोग समझते हैं हम सांई को भगवान मानते हैं इसलिए वह भगवान है। इस मानने के विचार में सच्चाई छुपी हुई है। एक चीज होती है और एक होती नहीं है परन्तु मान ली जाती है, यह मानने और होने में बड़ा अन्तर है। हिन्दू गाय को माता मानता है परन्तु मुसलमान उसे सब्जी समझता है। गाय दोनों के विचारों से कोई सम्बन्ध नहीं रखती। होने पर सबको मानना पड़ता है। मानने पर जो मानता है उसके लिए ही वह होता है दूसरे के लिए उसका कोई मूल्य नहीं होता। कोई किसी को ईश्वर मानता है कोई किसी को। मानने से सबके ईश्वर अलग-अलग हैं। यदि इनमें से कोई ईश्वर होता तो सब को उसी को ईश्वर मानना पड़ता। अत: अलग मान्यता ही अलग भगवान होने का कारण है।

अब प्रश्न होता है सबको अपनी-अपनी आस्था रखने का अधिकार। कोई किसी को ईश्वर माने किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए यह बात ठीक लगती है परन्तु विचार करने पर मिथ्या सिद्ध होती है। पहली बात यह कि मान्यता मिथ्या, झूठी है। अत: भगवान भी झूठा है। दूसरी बात एक भगवान को मानने वाला अपने प्रचार से, प्रलोभन से दूसरे को भगवान मानने के लिए प्रेरित करता है। तीसरी बात एक वर्ग दूसरे भगवान को तोड़-फोड़ कर अपने भगवान को मानने के लिए बाध्य करता है। जैसे नागालैण्ड में ईसाइयों ने एक भी मन्दिर नहीं रहने दिया। सारा इस्लाम का इतिहास मन्दिर गिराकर मस्जिद बनाने का है। आप आस्था के नाम पर इन तीन परिस्थितियों में कौनसी परिस्थिति का समर्थन करना चाहते हैं। जब आपकी आस्था व्यक्ति से आगे समाज और देश का संकट बन जाये तब इसको समझना और उसका प्रतिकार करना ही श्रेष्ठ है। स्वामी स्वरूपानन्द इन तीन में से दूसरी बात का खण्डन कर रहे हैं। पहली बात का वे समर्थन करते हैं।

जो व्यक्ति अवतारवाद को स्वीकार करता है वह पतन के मार्ग का अनुयायी अवश्य होगा क्योंकि वे अवतार के रूप में ईश्वर के पतन को स्थापित करते हैं। अवतारवाद के कारण ईश्वर के जन्म-मरण के चक्र में फंसना, उसका मनुष्य बनना, मनुष्य के अज्ञान और मूर्खताओं का अनुकरण करना, अवतारवाद का ही परिणाम है। जब हम अवतारवाद में विश्वास करते हैं तो ईश्वर को सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक सर्वज्ञ गुण से गिराकर उसे अल्पज्ञ, एकदेशी, अल्प समार्थ्य वाला बना डालते हैं जब उसका और पतन कर देते हैं तो भगवान को जड़ मूर्ति में बदल देते हैं यह परमात्मा के पतन की पराकाष्ठा है। यह जड़ -पूजा हिन्दुओं को अन्य मत-मतान्तरों से जोड़ती है। जब मनुष्य परमेश्वर को जड़ मूर्ति में बदल देता है तो समस्त जड़ पदार्थों का स्वयं अधिष्ठाता बनकर ईश्वर को गौण करके स्वयं ईश्वर बन बैठता है। तब ईश्वर के आदेश न चलकर पुजारी के आदेश चलने लगते हैं। यही इन मत-मतान्तरों में ईश्वर, गुरुओं और अवतार के नाम पर हो रहा है।

इसी जड़ -पूजा, अवतारवाद और गुरुडम के कारण हिन्दू समाज जिन रूढ़ियों, अन्धविश्वासों व जड़ता का शिकार हुआ है, जिसका परिणाम एक हजार वर्ष की दासता है। हम जब परमेश्वर को निराकार से साकार और साकार से जड़ बना देते हैं तब ईश्वर कितना निरीह बन जाता है, उसका एक उदाहरण उडुपी का कृष्ण मन्दिर है। यह एक बड़ा प्रसिद्ध मन्दिर है, इसकी प्रसिद्धि का कारण भी बड़ा विचित्र है। सामान्य रूप से जब मन्दिरों में प्रवेश करते हैं तो भगवान की मूर्ति का मुख द्वार की ओर होता है परन्तु इस मन्दिर में मुख्य द्वार की ओर भगवान की पीठ है। बड़े हिन्दू नेता और सन्त इसे भगवान के बड़प्पन से जोड़ते हैं परन्तु यथार्थ तो यह है कि यह भगवान की कायरता का उदाहरण है। इस मन्दिर के विषय में कहानी है- एक भक्त जो अछूत समुदाय से था, वह प्रतिदिन भगवान के दर्शनों के लिए मन्दिर के मुख्यद्वार से मन्दिर के अन्दर तो जा नहीं सकता था अत: मन्दिर की पिछली दीवार के छेद से भगवान के दर्शन करता था, उस समय उस भक्त को केवल भगवान की पीठ दिखाई देती थी तब भगवान ने प्रसन्न होकर अपना मुख पीछे की ओर घुमा लिया और भक्त को प्रतिदिन दर्शन देने लगे। आप उसे भगवान की उदारता कह सकते हैं परन्तु यह कायरता है क्या भगवान भक्त को मन्दिर में नहीं बुला सकता था? वह पुजारी और सवर्ण भक्तों का गुलाम था या उनसे डरता था? क्या पुजारी को आदेश नहीं दे सकता था कि मेरे भक्तों को मेरे पास लेकर आओ। क्या पुजारी भगवान के आदेश को मानने से इनकार कर सकता था। परन्तु भगवान जब निराकार से साकार अवतार और अवतार से जड़ पत्थर बन जायेगा तब उसे वही करना पड़ेगा जो पुजारी कहेगा। यही सांई के साथ भी है, सांई जो होगा सो होगा आज सांई वह होगा जो सांई के पुजारी कहेंगे। अत: जड़ पूजा से व्यक्ति बुद्धिहीन और धर्म से पतित हो जाता है, भगवान के नाम पर कहीं भी पाप करने में संकोच नहीं करता। तभी वेद कहता है-

न तस्य प्रतिमा अस्ति।

उस भगवान की कोई प्रतिमा नहीं है।

- धर्मवीर:

जैसे सकल ऐश्वर्य का देने वाला जगदीश्वर है वैसे सभाध्यक्षादि मनुष्यों को होना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.३०

आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण.....

क्या श्रद्धा से ईश्वर मिल जाता है?

– स्वामी विष्वङ्

प्रत्येक ईश्वर भक्त परमेश्वर का साक्षात्कार करना चाहता है। ईश्वर साक्षात्कार की इच्छा मनुष्य को और अधिक ईश्वर की ओर उन्मुख करती है। मनुष्य ने ईश्वर को प्राप्त करने के उपायों को खोजा है और उन पर उद्यम भी किया है। महर्षि पतञ्जलि ने योगदर्शन में ईश्वर को प्राप्त करने की विधियाँ बताई हैं? उन विधियों में एक विधि है **'उपायप्रत्यय'** उपाय का अभिप्राय वह साधन=वह कारण जिसके माध्यम से ईश्वर का दर्शन होता है। ऐसे साधन या कारण को उपाय कहते हैं और उस उपाय की जानकारी को प्रत्यय कहते हैं। साधनों या कारणों की जानकारी करके ईश्वर का साक्षात्कार जिससे किया जाता है उसको **'उपायप्रत्यय'** कहते हैं। उपायप्रत्यय नामक समाधि उन योगाभ्यासियों को प्राप्त होती है जिनके पास पूर्व जन्मों के विशेष संस्कार नहीं होते हैं। जिनको इस वर्तमान जन्म में अत्यन्त घोर पुरुषार्थ करना पड़ता है। जिनके पास पूर्व जन्मों के विशेष संस्कार होते हैं, उनको **'भवप्रत्यय'** नामक समाधि प्राप्त होती है। जिनको संसार में होने वाली घटनाएँ (जन्म व मृत्यु) समाधि तक पहुँचा देती हैं। जन्म और मृत्यु की जानकारी से प्राप्त होने वाली समाधि को भवप्रत्यय कहते हैं। ये दोनों (भवप्रत्यय और उपायप्रत्यय) समाधियाँ योगाभ्यासी को ईश्वर साक्षात्कार करवाती हैं। इन दोनों समाधियों में से यहाँ पर उपायप्रत्यय समाधि की चर्चा की जा रही है। उपायप्रत्यय नामक समाधि किस प्रकार की होती है? इसका समाधान महर्षि पतञ्जलि ने सूत्र के रूप में अभिव्यक्त किया है–

'श्रद्धावीर्यस्मृतिसमाधिप्रज्ञापूर्वक इतरेषाम्'

(योग. १.२०)

इस सूत्र में महर्षि ने श्रद्धा, वीर्य, स्मृति, संप्रज्ञात समाधि और ऋतम्भरा प्रज्ञा को ईश्वर साक्षात्कार करने के लिये उपाय के रूप में ग्रहण किया है। इन उपायों को अपनाने पर ईश्वर साक्षात्कार होता है। इन उपायों में से एक उपाय श्रद्धा है, जिसकी चर्चा यहाँ विशेष रूप से की जा रही है। श्रद्धा ईश्वर साक्षात्कार कराने का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। श्रद्धा मन की एक सूक्ष्मतम, पवित्रतम और उच्चतम दिव्य भावना है। जिस योगाभ्यासी में श्रद्धा होती है, वह ईश्वर साक्षात्कार करने का अधिकारी होता है। श्रद्धावान् योगाभ्यासी अपने लक्ष्य को पूर्ण करने में समर्थ होता है। संसार में श्रद्धा को लेकर बहुत अधिक भ्रम फैला हुआ है। लोग कहा करते हैं कि जिसमें श्रद्धा हो, वहाँ तर्क और प्रमाण नहीं करना चाहिए। जहाँ–जहाँ श्रद्धा होगी वहाँ–वहाँ बहस (तर्क, प्रमाणों के द्वारा) नहीं करना चाहिए। श्रद्धा में बहस नहीं करना चाहिए, यह लोगों की मनगढ़न्त मान्यता है। मनुष्य मनगढ़न्त मान्यता तब बनाता है जब उसे वास्तविक जानकारी नहीं होती है। किसी व्यक्ति को कोई जानकारी मिलती है, तो वह जानकारी देने वालों के ऊपर निर्भर करता है। यदि जानकारी देने वाले शुद्ध–पवित्र शुभगुण सम्पन्न लोग होते हैं, उस स्थिति में जानकारी यथार्थ होती है। यदि अशुद्ध–अपवित्र अशुभ–पापगुण सम्पन्न लोग होते हैं, तो उस स्थिति में जानकारी अयथार्थ होती है। इसलिए जानकारी ग्रहण करते समय मनुष्य को सतर्क रहना चाहिए अर्थात् परीक्षा करके ही जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।

श्रद्धा के विषय में वास्तविक जानकारी प्राप्त करने के लिए हमें महापुरुषों, ऋषि–महर्षियों का आश्रय लेना चाहिए। हम सब जानते हैं कि महापुरुष, ऋषि–महर्षि पवित्र–शुद्ध शुभगुण सम्पन्न होते हैं। उनमें पूर्ण परोपकार की भावना रहती है। यदि किसी कारण ऋषि–महर्षियों के कथन में किसी भी प्रकार का संशय हो भी जाये, तो हमें वेद का आश्रय अवश्य लेना चाहिए। क्योंकि वेद स्वतः प्रमाण होते हैं। साक्षात्–ईश्वर द्वारा कहा गया होने से वेद निर्भ्रान्त होते हैं। श्रद्धा के विषय में वेदों में अनेक स्थलों में वर्णन आया है। श्रद्धा को समझना अनिवार्य हो गया है, क्योंकि वेदों में भी श्रद्धा का वर्णन है। जो वेद कहता है उसे जानना मनुष्य का परम कर्त्तव्य है। महापुरुषों ने श्रद्धा को अनेक स्थानों में परिभाषित किया है यथा–

श्रदिति सत्यमेवाहुर्धारणं धोच्यते बुधैः।
यया हि धार्यते सत्यं वृत्त्या श्रद्धेति सा मता।।

श्रद्धा शब्द में दो शब्द जुड़े हुए हैं। एक 'श्रत्' दूसरा 'धा'। श्रत् का अर्थ है 'सत्य' और धा का अर्थ है 'धारण करना'। जिस व्यवहार–क्रिया कलाप से मनुष्य सत्य को धारण करता है, उसे श्रद्धा कहते हैं। ऐसा ही ऋषि–महर्षि मानते हैं और अपने शास्त्रों में लिखते भी हैं। महर्षि स्वामी

दयानन्द सरस्वती ने भी श्रद्धा का अर्थ लिखते हुए कहा है-

ईश्वरसत्यधर्मादिगुणानामुपर्यत्यन्तं विश्वासः श्रद्धा।

(ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका)

अर्थात् ईश्वर, सत्य, धर्म, न्याय आदि उत्तम-उत्तम शुभ गुणों में अत्यन्त-पूर्ण विश्वास रखने को श्रद्धा कहते हैं। संसार में भी जिसे लोग सत्य समझते-जानते और मानते हैं, उसी में आस्था-विश्वास रखते हैं और उसी को श्रद्धा कहते और मानते हैं। मनुष्य का यह स्वभाव है कि वह अपनी समझ से- ज्ञान से सत्य में- यथार्थ में ही विश्वास रखता है। असत्य-अयथार्थ में कभी विश्वास नहीं रखता।

महर्षि वेदव्यास श्रद्धा का अर्थ करते हुए लिखते हैं कि '**श्रद्धा चेतसः संप्रसादः**' अर्थात् मन की पूर्ण प्रसन्नता को श्रद्धा कहते हैं। यहाँ पर 'संप्रसादः' शब्द का अर्थ पूर्ण प्रसन्नता है। यथार्थ में जब मनुष्य किसी वस्तु को यथार्थ=सत्य-सत्य जानता है तब उस वस्तु के प्रति पूर्ण विश्वास उत्पन्न होता है। पूर्ण विश्वास में ही मनुष्य पूर्ण प्रसन्न हो पाता है। प्रसन्नता का कारण विश्वास है और विश्वास का कारण सत्यता है। इसलिए महर्षि वेदव्यास ने विश्वास रूपी कारण को और प्रसन्नता रूपी कार्य को एक (कार्य कारण को एक) मान कर अभिव्यक्त किया है। इस कारण 'संप्रसादः' शब्द का अर्थ विश्वास भी किया जाता है। मनुष्य यथार्थ वस्तु में ही विश्वास रखता है। महापुरुष, ऋषि-महर्षि भी श्रद्धा का अर्थ विश्वास ही करते हैं। ऋषि आदि महापुरुष जो भी अर्थ करते हैं, वे अपनी इच्छा के अनुसार न करके वेद के अनुसार करते हैं। वेद भी श्रद्धा का अर्थ वेद मन्त्रों के माध्यम से स्पष्ट करता है-

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः।
अश्रद्धामनृतेऽदधाच्छ्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।।

(यजुर्वेद. १९.७७)

अर्थात् (प्रजापतिः) प्रजा के पालक-रक्षक परमपिता परमेश्वर ने (सत्यानृते) सत्य और अनृत रूपी झूठ के (रूपे) स्वरूपों को (दृष्ट्वा) देखकर-जानकर (व्याकरोत्) सत्य और झूठ को अलग-अलग किया- दोनों की पृथक्-पृथक् व्यवस्था की है। ये दोनों मिले हुए एक साथ नहीं रह सकते हैं। इसलिए परमात्मा ने (अनृते) असत्य-झूठ में (अश्रद्धाम्) अश्रद्धा को (अदधात्) स्थापित किया अर्थात् झूठ में अश्रद्धा को उत्पन्न किया। इसलिए मनुष्य झूठ में श्रद्धा नहीं रखता है। और प्रजापति ने (सत्ये) यथार्थ सत्य में (श्रद्धाम्) श्रद्धा को स्थापित किया है अर्थात् सत्य में श्रद्धा को उत्पन्न किया। इसलिए मनुष्य सत्य में श्रद्धा-विश्वास रखता है। परमपिता परमेश्वर की उस सुव्यवस्था के कारण सम्पूर्ण भूमण्डल पर प्रत्येक मनुष्य इस सार्वभौम सिद्धान्त का पालन करता है। यह नियम अटल है कभी न बदलने वाला है अर्थात् कभी कोई मनुष्य झूठ में श्रद्धा रखें, ऐसा कभी नहीं हो सकता। क्योंकि मनुष्य की आत्मा असत्य को कभी भी स्वीकार नहीं करती। इसीलिए यह नियम सार्वभौम नियम है अर्थात् भूमण्डल में रहने वाले सभी मनुष्यों के द्वारा पालन करने योग्य है। इसलिए श्रद्धा मन की विशिष्ट पवित्रतम दिव्य भावना है।

महर्षि पतञ्जलि और महर्षि वेद व्यास ने श्रद्धा को ईश्वर साक्षात्कार का कारण बताया है। ऐसा ही वेद कहता है-

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

(यजुर्वेद. १९.३०)

अर्थात् श्रद्धा से सत्य की प्राप्ति होती है। यहाँ सत्य से सत्य की प्राप्ति बताई जा रही है। क्योंकि सत्य श्रद्धा में स्थापित है। जैसा कि प्रजापति परमेश्वर ने सत्य को श्रद्धा में स्थापित किया था, इस बात को '**दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत्....**' मन्त्र में स्पष्ट किया गया। इस मन्त्र में कहा जा रहा है कि श्रद्धा से सत्य प्राप्त होता है अर्थात् सत्य से सत्य प्राप्त हो रहा है। मन्त्र का अर्थ इस प्रकार है कि योग साधक (व्रतेन) व्रत के माध्यम से (दीक्षाम्) दीक्षा को (आप्नोति) प्राप्त करता है। यहाँ पर व्रत का अभिप्राय क्या हो सकता है? क्योंकि लोक में व्रत शब्द से उपवास (भोजन न करना) अर्थ लेते हैं। क्या व्रत का अर्थ उपवास है? नहीं व्रत का अर्थ उपवास नहीं है। फिर क्या अर्थ है? महर्षि पतञ्जलि और वेदव्यास ने व्रत का अर्थ योगदर्शन में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह बताया है। इन्हीं को व्रत कहा है और इनका पालन सभी प्रकार की दृष्टियों से बिना विकल्प से पालन करने पर इन्हें 'महाव्रत' कहा है।

आज मनुष्य ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए अलग-अलग प्रकारों से उपवास करते और ऐसा करके वे मानते हैं कि इससे ईश्वर प्रसन्न होकर वरदान देता है। परन्तु ऐसा ईश्वर नहीं है जैसा आज लोग स्वीकार करते हैं। क्योंकि एक ओर मनुष्य उपवास करता हुआ दूसरी ओर हिंसा-अन्यायपूर्वक दूसरों को कष्ट, पीड़ा, दुःख पहुँचा रहे हैं। अवसर पाकर झूठ बोल रहे हैं। अवसर पाकर नाना प्रकार की चोरियाँ कर रहे हैं। अपने आप पर संयम न रखते हुए रज-वीर्य का विनाश कर रहे हैं। आवश्यकता से अधिक

साधनों का संग्रह कर-करके अन्यों को साधन रहित बना रहे हैं। ऐसी स्थिति में क्या भला ईश्वर उपवास मात्र से प्रसन्न हो सकता है? और प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दे सकता है? ऐसे ईश्वर कभी प्रसन्न नहीं हो सकता है। इसलिए व्रत शब्द का अर्थ उपवास न ले कर ऋषियों के अनुसार सत्याचरण-यथार्थाचरण ही लेना चाहिए। इसलिए वेद कहता है सत्याचरण रूपी व्रत के माध्यम से मनुष्य दीक्षा को प्राप्त होता है। यहाँ पर दीक्षा का अभिप्राय है अधिकारी बनना या योग्य बनना है। मनुष्य जब सत्याचरण करता है, तो वह ईश्वर साक्षात्कार करने के योग्य या अधिकारी बनता है। जिस प्रकार से आई.ए.एस. बनने के लिए एक निश्चित योग्यता की आवश्यकता पड़ती है। उसी प्रकार ईश्वर साक्षात्कार करने के लिए एक निश्चित योग्यता चाहिए। जैसे कोई भी (बिना योग्यता के) आई.ए.एस. के अधिकारी नहीं बनता। वैसे ही ईश्वर साक्षात्कार करने के लिए व्रत का पालन करना अनिवार्य है। केवल उपवास मात्र से कदापि नहीं बन सकता।

योगसाधक व्रत से दीक्षित=अधिकारी-योग्य जब बन जाता है तब साधक (दीक्षया) उस दीक्षा से (दक्षिणाम्) दक्षिणा को (आप्नोति) प्राप्त करता है। यहाँ दक्षिणा का अभिप्राय फल से है, सत्याचरण का परिणाम फल के रूप में प्राप्त होता है। योगसाधक जैसे-जैसे सत्याचरण करता जाता है, वैसे-वैसे योग साधक को सुख रूपी फल प्राप्त होता रहता है। सत्याचरण करने वाले के प्रति अन्य लोग आदर सत्कार करते हैं। भले ही शत्रु भी क्यों न हो वह वाणी से आदर तो नहीं करता परन्तु मन से, आत्मा से अवश्य आदर करता है। सत्याचरण करने वाले को विशेष रूप से आन्तरिक फल अधिक और पूर्ण प्राप्त होता है। यद्यपि बाह्य फल भी प्राप्त होता है, किन्तु अनेक बार बाहर के लोग अन्यायकारी जब बन जाते हैं तब वे बाह्य फल को रोक देते हैं। संसार में झूठ बोलने वालों की संख्या अधिक हो जाती है, तो उनके बीच में रहने वाले सत्याचारी व्यक्ति को सत्य का फल कम-न्यून मिल सकता है या नहीं मिल सकता है अथवा देर से मिल सकता है। यदि मनुष्यों के द्वारा सत्य का फल नहीं मिलता है, तो परमेश्वर अपने नियम के अनुसार सत्य का फल अवश्य देता है। हाँ, तात्कालिक रूप में फल नहीं मिल रहा है, ऐसा प्रतीत अवश्य होता है। परन्तु ईश्वर न्यायकारी है, इसलिए मनुष्य भले ही फल नहीं देता हो परन्तु ईश्वर कभी न कभी अवश्य फल देगा। इस कारण किये हुए कर्म कभी निष्फल नहीं होते हैं।

सत्याचरण से तात्कालिक भौतिक हानि हो सकती है, परन्तु आन्तरिक-आत्मिक हानि कभी नहीं हो सकती। हो सकता है- भोजन, वस्त्र, घर, आने-जाने के साधन न मिले या जो मिले हुए हैं वे छीने जाये तो इससे भौतिक रूप से कष्ट अवश्य होता है। परन्तु उस कष्ट को सहन करके आगे बढ़ना होता है तभी ईश्वर साक्षात्कार तक पहुँच पाते हैं। सत्यवादी के समक्ष असत्यवादी विभिन्न प्रकार की बाधाएँ उपस्थित करते ही हैं। उन को सहन करना ही तप कहलाता है। ये छोटे-मोटे कष्टों को सहन करते हुए बड़े कष्टों (जन्म से और मृत्यु से मिलने वाले कष्टों) से बचा जा सकता है। इसलिए सदा सत्याचरण करना होता है। चाहे अपने मुख्य लक्ष्य (ईश्वर साक्षात्कार) को पाने के लिए मृत्यु भी क्यों न हो जाये, तो भी सहर्ष स्वीकार कर लेना चाहिए। जिससे अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सके। इसलिए महर्षि स्वामी दयानन्द लिखते हैं कि-

'यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्'

(सत्यार्थप्रकाश भूमिका)

''इसका अभिप्राय यह है कि जो-जो विद्या और धर्मप्राप्ति के कर्म हैं वे प्रथम करने में विष के तुल्य और पश्चात् अमृत के सदृश होते हैं।'' महर्षि के इस वचन से योगसाधक को कभी सत्याचरण को त्याग नहीं करना चाहिए। संसार में सत्यवादी की कीर्ति-यश सदा होता है। यह योग साधक की दक्षिणा है। संसार में जब तक जीवित रहेगा तब तक कीर्ति-यश रूपी दक्षिणा मिलती रहेगी और संसार से निकल कर मुक्ति में जाते हैं, तो वहाँ भी दक्षिणा मिलती ही रहेगी।

सत्याचरण से जैसे-जैसे दक्षिणा मिलती रहती है वैसे-वैसे साधक में (दक्षिणा) दक्षिणा से (श्रद्धाम्) श्रद्धा को (आप्नोति) प्राप्त होता है। अर्थात् फल रूपी दक्षिणा की प्राप्ति योग साधक में श्रद्धा को उत्पन्न करती है। सत्य से फल और फल से विश्वास रूपी श्रद्धा बनती है। फल प्राप्ति साधक को विशेष रूप से विश्वास जगाती है। ऐसी स्थिति में साधक ईश्वर के प्रति पूर्ण विश्वास करने लगता है। ईश्वर के न्याय पर, दया पर, कर्म-फल-व्यवस्था पर, सभी पर विश्वास करने में समर्थ होता है। जैसे-जैसे ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभावों को जानता जाता है वैसे-वैसे आचरण करने लगता है। साधक का आचरण ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुरूप होने से उसका व्यवहार समाज के प्रति

सर्वथा बदल जाता है अर्थात् सब के साथ उचित-न्याय-सत्य-धर्म युक्त व्यवहार करता जाता है। ऐसे व्यवहार के कारण समाज उसे यश प्रदान करता है, जिससे साधक और अधिक समाज का कल्याण करता है, उससे और अधिक कीर्ति प्राप्त होती है। इस प्रकार साधक आगे-आगे उन्नत होता हुआ पूर्ण रूप से सत्याचरण करता है और पूर्ण सत्याचरण से पूर्ण दक्षिणा को प्राप्त कर लेता है। पूर्ण दक्षिणा से पूर्ण श्रद्धा उत्पन्न होती है। जब साधक में ईश्वर के प्रति, आत्मा के प्रति और संसार के प्रति पूर्ण श्रद्धा उत्पन्न होती है, तो (श्रद्धया) उस पूर्ण श्रद्धा से (सत्यम्) सत्य यानि ईश्वर (आप्यते) प्राप्त होता है।

यहाँ पर मन्त्र में '**सत्यम्**' शब्द से ईश्वर का ग्रहण होता है। मनुष्य का अन्तिम प्रयोजन भी ईश्वर ही है और ईश्वर सत्य स्वरूप है। साक्षात् वेद भी ईश्वर को सत्य शब्द से कथन करता है। ईश्वर सत्य - यथार्थ है '**सत्यश्चित्रश्श्रवस्तमः**' (ऋग्वेद १.१.५) यहाँ पर ईश्वर को 'सत्यः' कहकर सम्बोधित किया है। इसलिए यदि कोई मनुष्य ईश्वर को प्राप्त करना चाहता है, तो उसे सत्य को स्वीकार करना होगा। वस्तु के यथार्थ स्वरूप को प्रमाण व तर्क के माध्यम से जान कर-समझ कर उसे उसी रूप में स्वीकार करना होगा। वह भी सत्य है और उसी सत्य को धारण करना ही श्रद्धा है और उसी श्रद्धा से सत्य-ईश्वर साक्षात्कार हो जाता है। इस रूप में सत्य से सत्य की प्राप्ति होती है।

ईश्वर में श्रद्धा रखने का अभिप्राय, मात्र ईश्वर को मानना नहीं है। जैसा ईश्वर है वैसा जानकर-समझकर वैसा ही आचरण (सत्याचरण) करना श्रद्धा है। ऐसी श्रद्धा को रखना सरल नहीं है परिश्रम साध्य है। बिना परिश्रम के श्रद्धा उत्पन्न नहीं होती है अर्थात् जैसा ईश्वर है वैसा जानना और जानकर वैसा ही पुरुषार्थ करना है, और वह पुरुषार्थ सरलता से नहीं होता है। उस पुरुषार्थ को करते समय नाना प्रकार की बाधाएँ, समस्याएँ, कठिनाईयाँ उपस्थित होती हैं। उन सबका समाधान सत्याचरण से करना है और सत्याचरण करते हुए और अधिक बाधाएँ उपस्थित होती हैं तो उनका भी समाधान करना है। ऐसी स्थिति में जो प्रतिफल प्राप्त होता है, उससे विशेष श्रद्धा उत्पन्न होती है। ऐसी श्रद्धा को ईश्वर प्राप्ति का साधन माना है। जिस प्रकार से ईश्वर में श्रद्धा का होना आवश्यक है, उसी प्रकार स्वयं (जीवात्मा) के प्रति भी श्रद्धा का होना आवश्यक है। जिस प्रकार से ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभावों को प्रमाण व तर्क से जानना होता है, उसी प्रकार जीवात्मा के गुण, कर्म व स्वभावों को प्रमाण व तर्क से जानकर-समझ कर आत्मा के साथ भी वैसा ही सत्याचरण करना चाहिए। जिससे आत्मा के प्रति भी वैसी ही श्रद्धा बनेगी जैसी श्रद्धा ईश्वर में बनती है। स्वयं के प्रति श्रद्धा रखे बिना साधक वैसा पुरुषार्थ नहीं करता जैसा पुरुषार्थ करने से ईश्वर प्राप्त होता है। ईश्वर व जीवात्मा के समान प्रकृति=संसार के प्रति भी पूर्ण श्रद्धा हो, जिससे संसार को संसार के रूप में जानकर-समझकर संसार को साधन के रूप में प्रयोग किया जा सके। यदि संसार में सत्य श्रद्धा नहीं होगी, तो संसार को साधन के रूप में प्रयोग न कर, प्रापणीय-प्राप्त करने योग्य लक्ष्य बना लेंगे। जिसे ईश्वर दूर हो जायेगा। ईश्वर प्राप्ति नहीं हो पायेगी। इसलिए श्रद्धा तीनों पदार्थों में यथार्थ होनी चाहिए।

- ऋषि उद्यान पुष्कर मार्ग, अजमेर

ऋषि मेला २०१४ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष ऋषि मेला ३१ अक्टूबर, १, २ नवम्बर शुक्र, शनि, रविवार २०१४ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉलें लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उस क्रम से स्टॉलों का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉलों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधा :– कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाईट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**–७.५ × १५ फीट।

ध्यातव्य : –१. स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर–उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। **२.** अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टेन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। **३.** बिस्तर रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। **४.** स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना अनुमति के पूर्व में स्टॉलों में सामान न रखें, न अधिकृत करें। **५.** आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें।

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

फिर घर पर पैर नहीं रखा:- वेद की एक सूक्ति का अर्थ है कि अग्नि से अग्नि जलती है। यह वेद ऋचा आज भी पूरे विश्व में सब भाषाओं में गूंज रही है। अंग्रेजी की लोकोक्ति Life Begets Life अर्थात् जीवन से जीवन बनता है- इसी का भावानुवाद है। फारसी में भी यह सूक्ति कहावत बन गई- दिल रा ब दिल राह अस्त अर्थात् हृदय की भाषा को हृदय समझता है। जो व्यक्ति व समाज आगे बढ़ना चाहते हैं उन्हें आग्नेय - बलिदानी, साहसी, परोपकारी पुरुषों को स्मरण करते रहना चाहिये। मनोविज्ञान का एक सिद्धान्त है As we thinketh so we becometh अर्थात् जैसा हम सोचते हैं वैसे ही हम बन जाते हैं। स्तुति का एक मुख्य फल यही तो है।

आर्यसमाज ने गत साठ वर्षों से धर्मप्रचार, धर्म रक्षा व समाज सेवा करने वाले अपने महापुरुषों व कर्मठ तपस्वी सेवक का स्मरण करना व गुणकीर्तन करना छोड़ दिया। या तो स्वतन्त्रता आन्दोलन की कहानियाँ तथा क्रान्तिकारी ही एक मुख्य विषय रह गये अथवा चुटकला प्रतियोगिता होने लगी। स्वामी अनुभवानन्द, पं. लेखराम, पं. रामचन्द्र देहलवी और भाई श्यामलाल तथा पं. नरेन्द्र अब कोई क्यों बनेगा?

आर्यसमाज ने एक से बढ़कर एक तप:पूत पैदा किये। ऐसे पुरुषार्थी परमार्थी कर्मवीरों में एक **महाशय कर्मचन्द जी वकील मीरपूरी** थे। सौ वर्ष का दीर्घ जीवन पाकर सन् १९८४ में दिल्ली में नश्वर देह का त्याग किया। अस्पृश्यता के विरुद्ध आर्यसमाज ने युद्ध छेड़ा तो आप भी आग में कूद पड़े। आप पर बिरादरी ने बहिष्कार का ऐसा भीषण मिजाईल छोड़ा कि आपके पिता लाला सोहनलाल (सोनलाल) ने भी आप को सम्पत्ति से वंचित करके घर से निकाल दिया। आपने आर्यसमाज तथा हिन्दू जाति के प्यार और भक्ति पर घर परिवार सब कुछ वार दिया। बाप ने घर से निकाला। आप आर्य होने के नाते पितृभक्त थे परन्तु वाह रे लेखराम के लाल। पिता ने कहा घर से निकल जा, तो उस दिन के पश्चात् आपने मृत्यु पर्यन्त पितृ घर में फिर पैर ही नहीं रखा। पानी के लिए एक ही कुआँ था। कर्मचन्द महाशय बन गया था सो उस कुएँ से पीने व नहाने का जल भी नहीं ले सकता था। स्वामी श्रद्धानन्द, शहीद रामचन्द्र का नामलेवा वीर कर्मचन्द आधी रात को कूएँ से जल खींच कर लाया करता था। यह इतिहास अत्यन्त लम्बा व गौरवपूर्ण है परन्तु वर्तमान के आर्यवीर दल के लिए यह निरुपयोगी समझ लिया गया है।

बहुत दूर से धर्मेश जी आर्य इतिहास पर मेरे व्याख्यान रिकार्ड करने आए तो कर्मचन्द जी ने बहिष्कृत होने पर मरते दम तक पितृघर में पैर नहीं धरा यह सुनकर वह हिल गए। उनके मन में ला. कर्मचन्द जी के पुत्र-पुत्रियों, नाती-पोतों से मिलने की इच्छा जागी। उनकी रुचि देखकर मैंने अपना पुरुषार्थ धन्य समझा। तड़प वाले तड़पाती जिनकी कहानी इतिहास पुस्तक माला का तीसरा पुष्प भी शीघ्र तैयार करने की ठान ली।

दुर्भाग्य से आर्यसमाज ने इतिहास लेखन की इस शैली का मूल्याङ्कन ही नहीं किया। आर्यसमाज के तथाकथित प्रवक्ता तो यही नहीं जानते कि यह शैली आर्यसमाज की ही देन है। इसके जनक तीन हैं:-

(१) पूज्यपाद स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज (२) पूज्य पं. विष्णुदत्त जी वकील (३) राजेन्द्र जिज्ञासु।

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने ही लेखक को इस शैली की - इतिहास की इस विद्या की घुट्टी दी थी। जीवन की सांझ हो गई है फिर भी मन में अभी वलवले हैं। जी में आया है कुछ और भाग दौड़ करके देश भर में भ्रमण करके अतीत की ऐसी सामग्री की कुछ और खोज करुँ।

वैदिक विचारधारा की विश्व-विजय:- शास्त्रार्थ समर में हिन्दुओं ने पहली बार चान्दपुर के मेले में परकीय मतों के मौलवियों व पादरियों को उखड़ते देखा। देश विदेश के पादरी व मौलवी प्यारे ऋषि के सामने से भाग खड़े हुए। राधास्वामी मत के गुरु श्री हजूर जी महाराज का यह कथन इतिहास का बहुत बड़ा सच ही नहीं, यह इतिहास का निचोड़ है। गोरा पादरी जोसेफ कुक भारत को ईसाई बनाने की धूआंधार घोषणा करते हुए घूमने लगा। अंग्रेजी पठित बाबुओं पर उसकी अंग्रेजी का रोब छा गया। महर्षि ने स्वयं मुम्बई जाकर उसे शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। ऋषि ने हुंकार भरी तो वह पूना भाग गया और पूना से सागर पार भाग खडा हुआ।

आर्यसमाज ने इस घटना का महत्त्व नहीं समझा इसे प्रचारित नहीं किया गया। पं. लेखराम स्वामी दर्शनानन्द से पिटकर मौलवी पादरी तथा अंग्रेजी पठित बाबू वेद पर

वार करने लगे, रेल, तार और अब कम्प्यूटर के युग में बैलगाड़ी के वेद का क्या उपयोग।

मनुष्य निर्मित पदार्थ व मानवीय कला पुरानी व जीर्ण होती है। मनुष्य के नियम व विधान संशोधित व निरस्त होते हैं। ईश्वर का कोई नियम तथा ज्ञान विधान कभी निरस्त नहीं होता। ईश्वर के सब सृष्टि-नियम अनश्वर हैं। इन्हें विज्ञान की भाषा में इटरनल कहा जाता है। संस्कृत के एक शब्द के वैज्ञानिक मर्म पर हमारे विद्वानों को सविस्तार लिखना व बोलना चाहिए। संस्कृत में सचाई के लिए सत् शब्द को प्रयोग किया जाता है। आचार्य रामदेव जी ने एक व्याख्यान में कहा था कि सत् का अर्थ है जिसका नाश न हो। जो सदा से हो और सदा रहे। ईश्वर, जीव व प्रकृति को भी इसी कारण से सत् कहा जाता है। वेद ईश्वर का ज्ञान है इसलिए यह सत्य विद्या यह सद्ज्ञान भी अनश्वर है। हर्ष का विषय है कि डा. गुलाम जेलानी जी ने अपनी एक पुस्तक में खुलकर यह स्वीकार किया है कि इलहाम (ईश्वरीय) ज्ञान अजली (अनादि) होता है। विकास और इलहाम दो परस्पर विरोधी बातें हैं। ईश्वर ज्ञान अनश्वर सदा रहने वाला है। यह वैदिक विचारधारा की विश्व-विजय है।

जीव ईश्वर निर्मित नहीं है:- २३ मार्च को श्री मदन लाल जी आर्य, डॉ. अशोक जी के साथ लेखक पंजाब के सबसे पुराने आर्य पुरुष महाशय चिरञ्जीलाल जी को श्रद्धाञ्जली देने पहुँचा। भीड़ तो बहुत थी परन्तु वातावरण श्रद्धाञ्जली देने को तो था नहीं। वहाँ एक 'योग ऋषि' श्री सूर्यदेव ने पांच बार यह कहा- 'ईश्वर ने जीवों को बनाया'। इससे हमें बहुत पीड़ा हुई। नास्तिक भी यह मानते हैं कि प्रकृति को न तो उत्पन्न किया जा सकता है और न ही इसे विनष्ट किया जा सकता है। जैसे ज्ञानशून्य, चेतनाशून्य प्रकृति को न तो बनाया जा सकता है और न नष्ट किया जा सकता है ठीक इसी प्रकार से जीव को भी न किसी ने गढ़ा है और न इसे नष्ट किया जा सकता है। 'आधुनिक अमरीका में धर्म का स्वरूप' ईसाइयों की पुस्तक में भी इस वैदिक सिद्धान्त को स्वीकार किया गया है। दुर्भाग्य की बात है कि आर्य के निधन पर एक बाबा जी ने इसके उलट बात बार-बार कही। सन्तों की महिमा ही निराली है। बाबा जी के प्रेमी व चेले भी कुछ पढ़ने लिखने में रुचि लेते होते तो वह ऐसी थोथी मिथ्या बात कहने की भूल क्यों करते।

ऋषि जीवन के मूल स्रोतों को देखिये:- गत दिनों इन पंक्तियों के लेखक ने सहज भाव से श्री विरजानन्द जी द्वारा उठाये गये एक गम्भीर प्रश्न पर अपनी प्रतिक्रिया दी थी। जब श्रीराम शर्मा जुण्डली ने महर्षि के बलिदान की घटना को झुठलाने का षड्यन्त्र रचा था तब इन लोगों ने कई अनाप-शनाप प्रश्न उठाकर जन साधारण में बुद्धि भेद पैदा करने तथा ऋषि जीवन को उपहास का विषय बनाने के लिए कई पापड़ बेले थे। ऐसी ही एक कुचाल यह थी कि ऋषि की एक दुर्बलता आम चूसना थी। प्रकारान्तर से ऋषि पर रसना इन्द्रिय की दासता का दोष भी थोप दिया। इन का कुतर्क था कि ऋषि जी की मृत्यु का कारण विष नहीं, अत्यधिक आमों का चूसना था। उस समय लेखक ने कुछ तर्क, प्रमाण व तथ्य देकर इस प्रहार को विफल बना दिया था।

श्रीमान् विरजानन्द जी ने बहुत मार्मिक प्रश्न पूछ कर इस सेवक को चौंका दिया कि सितम्बर के अन्त में ऋषि जी को दूध में विष दिया गया। सितम्बर में आम कहाँ से आ गये? इस लेखक को यौवन गुरदासपुर जनपद (पंजाब) में आया। दीनानगर कादियाँ आदि के आमों की देश भर में प्रसिद्धि रही है परन्तु वहाँ भी अगस्त के दूसरे सप्ताह आम समाप्त हो जाते थे। इन लोगों ने बहुत सी बातें बना बनाकर महर्षि को अन्तिम वेला में निर्बल और रोगी दिखाने का भी षड्यन्त्र रचा। ऋषिवर सन् १८८१ के अन्तिम महीनों में बनेड़ा राजस्थान पधारे थे। बनेड़ा के राजगुरु श्री जगजीराम जी शर्मा ने अपनी डायरी में ऋषि के आगमन की चर्चा में महाराज के स्वास्थ्य, ब्रह्मचर्य बल, तेज का भी अच्छा उल्लेख किया इस दस्तावेज को परोपकारिणी सभा ने सुरक्षित कर रखा है। लक्ष्मण जी के ग्रन्थ में भी इसे स्कैनिंग करवा कर दिया गया है। सनातनी पं. नगजीराम लिखते हैं कि ऐसी भव्य मूर्ति मैंने उनके सिवाय आज तक कहीं नहीं देखी। वन में विचरण करते ऋषि की भव्य मूर्ति देखकर लोग दंग रह जाते। उन्हें देव विशेष की मूर्ति माना जाता था। एक-एक अंश की सुदृढ़ता का नगजीराम जी ने चित्र चित्रण किया है। पाठक लक्ष्मण जी के ग्रन्थ का पृष्ठ ५३० बार-बार पढ़ें। क्या मात्र दो वर्षों में ऋषि का शरीर शिथिल पड़ गया? कवि राजा श्यामलदास जी ने सन् १८८२ में उदयपुर की घटनाओं का वर्णन करते हुए कई बार उन्हें यतिराज, यतिवर आदि शब्दों से स्मरण किया है। उन्हें लेशमात्र भी कोई व्याधि नहीं थी राव राजा तेजसिंह तथा कविवर चन्द्रवरदाई के वंशज नैनूराम ने जोधपुर की ऋषि की दिनचर्या लिखी है। हमने इन्हें भी उद्धृत किया है। चाँद का मारवाड़ अंक भी इस दृष्टि से एक अमूल्य दस्तावेज है। कोई यह न समझे कि हमने इसे सुरक्षित नहीं किया।

ऋषि सन् १८८१ में ही अजमेर तथा ब्यावर पधारे। यशस्वी इतिहासकार हरविलास जी ने अपने संस्मरणों में महाराज के ब्रह्मचर्य बल की दो पठनीय तथा अविस्मरणीय घटनायें दी हैं। हरविलास जी का कथन इतिहास की अमूल्य धरोहर है। ब्यावर में पहले वैद्य रविदेव जी तक सब पुराने आर्य ऋषि के तेजस्वी मुखड़े तथा गर्जना के विषय में पीढ़ी दर पीढ़ी जो कुछ सुनाया करते थे उन्हीं शब्दों में अब श्री ओममुनि जी सुनाया करते हैं। जैन मन्दिर के घण्टों के शोर में भी महर्षि की गर्जना, उनकी शब्द ध्वनि सबको सुनाई देती थी। सुनने वाले आजतक उनकी मधुर ध्वनि और ओ३म् का नाद न भूल पाए। ऋषि जीवन के मूलस्रोतों की सुरक्षा अल्मारियों में रखने से नहीं इन्हें हम कण्ठाग्र करें। खूब प्रचारित करें। तुलनात्मक शैली से इन पर लिखा करें। बैलों के सींग पकड़ लिए और राव कर्णसिंह का वार बेकार कर दिया। इतने मात्र से विरोधियों का मुख बन्द नहीं किया जा सकता। राधास्वामी गुरु हजूर जी महाराज ने भी लिखा है कि स्वामी दयानन्द जैसा निर्भीक, निर्लोभी और ब्रह्मचारी होना अति कठिन है। हमारी इस टिप्पणी को ऋषि भक्त बार बार विचार करके समझ जायेंगे कि हमारा क्या आशय है और हम आर्यों से क्या चाहते हैं।

राजा सर किशनप्रसादः- 'परोपकारी' के मार्च (द्वितीय)२०१४ के अंक में पृष्ठ १२ पर एक नाम अशुद्ध छप गया। कहा नहीं जा सकता कि मुद्रण दोष से अथवा हमारी भूल से हैदराबाद स्टेट के प्रधानमन्त्री राजा सर किशनप्रसाद जी का नाम राज जयकिशनदास छप गया है। कल्याण के आक्रमण का उत्तर देते हुए हमने लिखा था राजा सर किशनप्रसाद मुसलमान बनने का मन बना चुके थे। पूज्य पं. रामचन्द्र जी देहलवी की वाणी सुनकर धर्मच्युत होने से बच गये। यह घटना हमारी कई पुस्ताकों में छपी है। सम्भव है सत्यार्थप्रकाश की चर्चा करते, लिखते-लिखते राजा जयकिशनदास जी का मस्तिष्क में घूम जाने से लेखक से ही यह चूक हो गई जिसका हमें खेद हैं। पाठक भूल सुधार कर लें।

अब बात चली है तो बतादें कि राजा सर किशनप्रसाद मूलतः हैदराबादी नहीं थे। वह पंजाबी खत्री थे और कपूरथला से उनका सम्बन्ध था। वह उर्दू के अच्छे कवि भी थे। आपने ऋषि दयानन्द जी पर एक लम्बी कविता भी लिखी थी। यह सद्धर्मप्रचारक में छपी थी। वह अंक हमने सम्भाल रखा है। कविता छोटी होती तो कहीं छपवा देते । वह बहुत लम्बी है।

राजा राममोहनराय और ओ३म् जपः- असत्य मत का खण्डन तो होना ही चाहिये परन्तु अन्य-अन्य मतावलम्बियों के जीवन व साहित्य पर वैदिक धर्म की गहरी छाप सप्रमाण प्रचारित करते रहिये। यह दोनों काम आर्यों ने छोड़ दिये। राजा राममोहन राय की चर्चा तो हमारे लोग लेखों में करते ही रहते हैं परन्तु यह नहीं लिखा व कहा जाता कि मरते समय उनके शरीर पर यज्ञोपवीत था। ऐसा प्रचार करने से बंगाल में यज्ञोपवीत के प्रचार में कुछ लाभ हो सकता है।

राजा राममोहन राय जी ने ओ३म् का जप करते-करते नश्वर देह का त्याग किया था। एकेश्वरवादी तो वह थे ही। इस घटना के प्रचार से बंगाल में ऋषि मिशन को लाभ मिलेगा। हिन्दू को अनेकेश्वरवाद तथा ईश्वरेतर पूजा, ताजिया व कबर पूजा से बचाने के लिए यह इतिहास जन जन तक पहुँचाना हमारा कर्त्तव्य है।

सस्ता मतः- हरियाणा से शान्तिधर्मी के एक स्वाध्याय प्रेमी पाठक ने पूछ लिया कि आपने कभी परोपकारी में पं. गणपति शर्मा जी के श्रीनगर (कश्मीर शास्त्रार्थ) का उल्लेख करते हुए परोपकारी में कभी लिखा था कि कश्मीर राज्य में उक्त शास्त्रार्थ के समय आर्यसमाज पर प्रतिबन्ध नहीं था। यह कहानी मनगढ़न्त व मिथ्या है। उस सज्जन ने आगे कहा है कि शान्तिधर्मी के फरवरी अंक में इस घटना को देकर यह छपा है कि तब युवराज हरिसिंह ने आर्यसमाज पर प्रतिबन्ध लगा रखा था। शान्ति धर्मी के तो कई सुयोग्य सम्पादक हैं। आपका लेख सत्य है अथवा शान्तिधर्मी का?

सज्जनो! इस प्रश्न का तो स्वागत है परन्तु उत्तर देते हुए डर लग रहा है। अपनों की बात को झुठलाऊँ तो न जाने क्या-क्या सुनना पड़े मौन रहने से आर्यसमाज की हानि है। उक्त शास्त्रार्थ से पहले जम्मू में महाराजा प्रतापसिंह की अध्यक्षता में आर्यों का एक शास्त्रार्थ महाराजा के निमन्त्रण पर ही हुआ था। उसमें स्वामी अच्युतानन्द, पूज्य ला. जीवनदास, मुनिवर दुर्गाप्रसाद, ला. हंसराज प्रिंसीपल तथा श्री स्वामी पूर्णानन्द ने वैदिक धर्म का पक्ष रखा। यह शास्त्रार्थ हमने छपवाया है। महाराजा ने आर्यों को दक्षिणा भी दी और प्रचारार्थ जम्मू आते रहने को भी कहा था।

युवराज हरिसिंह तब भी था। उस शास्त्रार्थ में राजदरबार के आर्य अधिकारियों का बहुत सहयोग मिला था। यह घटना श्रीनगर शास्त्रार्थ से थोड़ा पहले की है। तब हजूरी

बाग आर्यसमाज स्थापित ही नहीं हुआ था। वहाँ से पं. गणपति शर्मा जी को बुलवाया गया यह एक चटपटी हदीस है। महाराजा प्रतापसिंह पूजनीय ला. जीवनदास को कश्मीर राज्य की सेवा में लेना चाहते थे। ये सब बातें जम्मू शास्त्रार्थ में पढ़ लीजिये।

तथ्य यह है कि गत साठ सत्तर वर्षों में आर्यसमाज ने तत्कालीन पत्रों व स्रोतों में इस शास्त्रार्थ का वृत्तान्त न तो खोजा है और न ही पढ़ा है। शास्त्रार्थ का समाचार 'सद्धर्म प्रचारक' में छपा था। इसे चुरू (पं. गणपति शर्मा के जन्म स्थान) से प्रकाशित सेवक के विस्तृत लेख में सप्रमाण छपवा दिया गया था। सत्यासत्य का निर्णय हम क्या दें ? तथ्य रख दिये हैं। प्रेमी प्रश्नकर्ता तथा सत्यनिष्ठ आर्य बन्धु आप विचार लें कि यथार्थ इतिहस क्या है। सम्पादक मण्डल की बहुगिनती को नमन करते हुए मानता हूँ कि मैं तो अकेला ही हूँ परन्तु स्मरण रखिये कि ईश्वर, उसका सदा ज्ञान वेद, वेदनिष्ठ आर्यों की श्रद्धा तथा इतिहास के दस्तावेज मेरे साथ हैं। मुझे निपट अकेला मानने की भूल कभी न करना। भूल होती तो स्वीकार करने में कतई संकोच न करता सेवा का अवसर दिया सो शान्तिधर्मी का भी धन्यवाद।

एक ज्ञानवर्द्धक रोचक चर्चा:- ऋषि जीवन तथा आर्यसमाज के इतिहास के नये-नये तथ्य व पक्ष हमने रखे। इनमें एक विशेष घटना गुणियों को यह जंची के एक राजपूत राव बहादुरसिंह आर्य समाज के प्रथम शास्त्रार्थ महारथी थे। ब्राह्मण कुलोत्पन्न पं. लेखराम, पं. गणपति शर्मा, पं. कृपाराम, नित्यानन्द, शिवशङ्कर एक से बढ़कर एक शास्त्रार्थ महारथी मैदान में निकले। क्रान्ति तो अब यह हुई ब्राह्मणेतर परिवारों के अनेक विद्वान् शास्त्रार्थ समर में निकले। इतिहास को नई दिशा मिली। एक क्रान्ति हुई। आर्य समाज के ऐसे शासत्रार्थ महारथियों पर कुछ लिखने की मांग की गई है।

विषय लम्बा है। आज केवल एक झांकी ही दी जावेगी- वह भी अधूरी। पूरी यहाँ कैसे दें? लिखित व मौखिक दोनों प्रकार के शास्त्रार्थ महारथियों का उल्लेख होगा। कालक्रम का भी यथा सम्भव ध्यान रखा जावेगा। पं. गुरुदत्त, मास्टर आत्माराम, मुनिवर दुर्गाप्रसाद, ला. मुरलीधर, स्वामी योगेन्द्रपाल, महात्मा मुंशीराम, महात्मा हंसराज, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, स्वामी रुद्रानन्द, मास्टर बख्शीशराम, चिरञ्जीलाल प्रेम, मेहता जैमिनि, पं. इन्द्र, स्वामी सोमानन्द नूरगढ़, पं. धर्मभिक्षु, ठाकुर अमरसिंह, पं. अयोध्याप्रसाद, श्री लक्ष्मण, पं. पूर्णचन्द बड़ोत, पं. नरेन्द्र, ठाकुर इन्द्र वर्मा, पं. रामचन्द्र देहलवी, स्वामी रामेश्वरानन्द, पं. चमूपति, मुंशीराम लासानी ग्रन्थी, महाशय ताराचन्द, श्री मनोहरलाल शहीद, पं. देवप्रकाश, पं. शान्तिप्रकाश, श्री उत्तमचन्द शरर, बाबा अर्जुनसिंह, महाशय किशोरचन्द रामाँमण्डी, श्रीमान् वेढ़ाराम (सिंध-पूना), पं. भगवद्दत्त, प्रो. हासानन्द जादूगर, पं. मनसाराम वैदिक तोप, प्रो. देवीदयाल लाहौर, प्रि. मेलाराम बर्क, पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय, चौधरी खूबसिंह, डॉ. बालकृष्ण कोल्हापुर, स्वामी धर्मानन्द, श्री वजीरचन्द विद्यार्थी, लाला शादीराम, ला. योगध्यान, पं. ओमप्रकाश खतौली इत्यादि। लिखित उत्तर देकर शास्त्रार्थ करने वालों में सबसे ऊपर नाम पं. लक्ष्मण आर्योपदेशक का है और सर्वाधिक मौलिक पं. चमूपति जी तथा पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जी का शास्त्रार्थ विषयक लिखित साहित्य था। ला. गणेशदास जी भी बढ़िया लिखा करते थे।

यहाँ एक संक्षिप्त सी झाँकी दी है। पौराणिक पण्डितों में सबके सब शास्त्रार्थ कर्त्ता ब्राह्मण घरों में जन्मे। ऋषि दयानन्द की शिष्य परम्परा में इतनी बड़ी संख्या में इतने सिद्धहस्त शास्त्रार्थ महारथियों का आगे आना एक बहुत बड़ी सामाजिक क्रान्ति है। जो नाम यहाँ दिये हें, ये सब ब्राह्मणेतर परिवारों में जन्मे। कोई पुरुषार्थी युवक इन्हें कालक्रम से और विस्तार देगा तो एक ठोस कार्य होगा। इस संक्षिप्त विवरण को आधार बनाकर आगे कार्य होना चाहिये। पगदण्डी बना दी है । सड़क का निर्माण बहुत लाभप्रद रहेगा। थोड़ा गुड़ डालकर अभी तक अधिक शर्बत का स्वाद चखा दिया है। यह भी ध्यान रहे कि लिखित शास्त्रार्थ की परम्परा तो आज पर्यन्त अखण्ड है। उसका कोई संकेत नहीं किया गया।

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रक्खें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते, इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर)

दिनांक : १२ से १९ अक्टूबर, २०१४

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों–बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने–ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१२ से १९ अक्टूबर, २०१४- **योग-साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर),**
सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

ऋषि मेला - ३१ अक्टूबर तथा १, २ नवम्बर २०१४

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। ये ध्यान-प्रशिक्षक आपके जनपद के निकट भी उपलब्ध हो सकते हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

हम कथा सुनाते हैं

- राजेन्द्र जिज्ञासु

खोले पाखण्डियों के पोल, तोले ज्ञान तुला पर तोल।
जीवन वार दिया अनमोल, गुणीजन शीश नवाते हैं.....

उसके टिका न कोई आगे, कल्पित भय भ्रम सारे भागे।
सोये भारतवासी जागे, बन्धन तोड़ दिखाते हैं.....

उसने भेद वेद के खोले, आर्ष वचन ऋषि ने बोले।
आसन पाखण्डियों के डोले, खण्डन खड़ग चलाते हैं.....

देकर पावन वेद उजाला, जग को जगमग करने वाला।
आया साधु मुनि निराला, मिथ्या ज्ञान मिटाते हैं.....

उसकी महिमा बड़ी महान्, करते रहे ऋषि विषपान।
हो गये परहित वे बलिदान, मुक्ति पथ अपनाते हैं.....

वह था ऋषियों का मतवाला, देव दयानन्द वेदों वाला।
जीवन मुर्दों में जिस डाला, छुआछूत भगाते हैं.....

वह था ज्ञान गुणों की खान, संकट में अविचल चट्टान।
उसकी राह पर हम कुर्बान, निर्भय हमें बनाते हैं.....

उसका सत्य वेद का भाष, करता अन्धकार का नाश।
गूञ्जा धराधाम आकाश, ऋषि का जय जय गाते हैं.....

वह था यति अतुल ब्रह्मचारी, देश हितैषी जनहितकारी।
ईश्वर तेरी लीला न्यारी, कहकर जग से जाते हैं।
आओ यति व्रति इक साधु की हम कथा सुनाते हैं।।

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

।। ओ३म् ।।

अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) के दो शिविर लगाये जा चुके हैं। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

भूत.....फैशन का

- रमेश मुनि

पिछले लेख में स्वस्थ शरीर बनाए रखने के लिए 'महर्षि चरक' द्वारा कहे गए तीन स्तम्भों का वर्णन किया था जो १. आहार २. निद्रा ३. ब्रह्मचर्य है।

शरीर की रक्षा का पहला स्तम्भ आहार जिसमें खाने पीने के लिए प्रयोग किए जाने वाले पदार्थ और शरीर को ढांपने के लिए प्रयोग किए जाने वाले वस्त्रों के बारे में पहले लिखा गया है।

भारत वर्ष में खाद्य पदार्थ को अत्यधिक रासायनिक खाद डालकर, कीटनाशक छिड़ककर विषाक्त बनाया जाता है। फिर इन्हीं पदार्थों से निर्मित 'फास्ट फूड' जो अनेक प्रकार के केमिकल मिलाकर बनाए जाते हैं, अनेक गम्भीर रोगों को उत्पन्न रहे हैं जिनमें अनेक प्रकार के कैंसर भी हैं।

इसी प्रकार हमारे युवक और युवतियाँ तथा उनको देखकर उनकी माताएँ व परिवार की अन्य महिलाएँ भी शरीर के अधिक भागों को दिखाने वाले ऐसे वस्त्र पहन रहे हैं जो सिन्थेटिक हैं या बहुत मोटे और अत्यधिक तंग होते हैं जो हमारे गर्म मौसम के लिए उचित नहीं। इसी कारण से अधिकांश लोग चमड़ी की बीमारियों से ग्रसित हो रहे हैं।

शरीर को, मन को बलवान रखने में निद्रा का भी पूरा हिस्सा है। रात में दस बजे तक सो जाना और प्रात: ४ से ५ बजे के बीच जग जाना अत्यधिक लाभकारी है। आज रात में १२-१ या २ बजे के लगभग सोते हैं और प्रात: ८-९-१० बजे सो कर उठते हैं। ये समय प्रकृति की और से प्रदान किए जाने वाले लाभों से रहित कर देते हैं ओर थोड़ी बड़ी आयु होने पर वे लोग प्राय: अनिद्रा से ग्रसित हो जाते हैं जिससे शारीरिक और मानसिक हानि होती है।

स्वस्थ शरीर के लिए महर्षि चरक ने तीसरा स्तम्भ ब्रह्मचर्य का पालन करना बताया है। जब तक गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति कार्य कर रही थी उस समय बालकों और बालिकाओं के गुरुकुल अलग हुआ करते थे। बालकों के गुरुकुल में अध्यापक पुरुष और बालिकाओं के गुरुकुल में महिलाएँ अध्यापन का कार्य करती थी। लड़कियों के गुरुकुल में पाँच वर्ष से बड़ी आयु का लड़का, लड़कों के गुरुकुल में पांच वर्ष से बड़ी लड़की नहीं जा सकती थी। बालकों और बालिकाओं को ब्रह्मचर्य पालन की शिक्षा दी जाती थी। इससे उनका वीर्य उर्ध्वरेत हो कर शरीर और बुद्धि को बढ़ाने वाला होता था। आज हमारे देश के कर्णधारों पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव (लोभ लालच के कारण) देखने में आता है इसलिए हमारे स्कूलों विद्यालयों या महाविद्यालयों में सहशिक्षा चलाई जा रही है अर्थात् लडकों और लड़कियों का एक ही कक्षा में बैठकर पढ़ाना। कुछ वर्ष पहले दिल्ली में एक इलेक्ट्रोपेथि कॉलेज में मैंने २-३ वर्ष पढ़ाया । कॉलेज के कक्षों में विद्यार्थियों के बैठने के लिए जो बैंच थे उन पर दो विद्यार्थी आराम से बैठ सकते थे किन्तु बैठते तीन-तीन थे। एक बैंच पर तीन बैठते थे दो लड़के दोनों ओर और बीच में लड़की या दोनों ओर दो लड़कियाँ और बीच में एक लड़का। ऐसी अवस्था में इनसे ब्रह्मचर्य पालन की क्या आशा रखी जा सकती है और कैसे स्वास्थ्य को उत्तम बनाया जा सकता है।

आज कल मित्र बनाने का भी फैशन है, सहशिक्षा के कारण प्राय: लड़कियों के मित्र लड़के और लड़कों की मित्र लड़कियाँ होती हैं। प्रात: काल विद्यालयों या महाविद्यालयों में मिलने पर लड़के-लड़कियों से और लड़कियाँ लड़कों से हाथ मिला कर अभिवाद करते हैं। ये स्पर्श एक दूसरे में उत्तेजना उत्पन्न करते हैं जो कुछ समय के मेल मिलाप के बाद इन्हें एकान्त स्थानों पर खड़े हो कर या बैठ कर बातचीत करने के लिए स्थान ढूँढने के लिए विवश करता है। आरम्भ की बातचीत, हाथ मिलाकर अभिवादन करना आदि अवस्था है आपसी निकट सम्बन्ध भी बनवा देती है। युवाओं की ये मित्रता प्राय: सेक्स पर खत्म होती है। घरों में दूरदर्शन पर दिखाई जाने वाली फिल्में और सीरियल इस प्रकार की घटनाओं को ही दिखाते हैं जिसमें युवाओं को सम्बन्ध बनाने के ढंग सिखाए जाते हैं। महर्षि दयानन्द ने युवक, युवती के लिए आठ प्रकार के मैथुनों का निषेध किया है जिनमें दर्शन और स्पर्श पहले दो प्रकार हैं। जब तक हमारे देश में ब्रह्मचर्य पालन, विद्याकाल में युवकों और युवतियों के लिए आवश्यक होता था हमारा राष्ट्र सब प्रकार से शिखर पर था और विश्व गुरु नाम से कहा जाता था।

विवाह से पहले युवक-युवती का शारीरिक सम्बन्ध या विवाह के बाद पुरुष का पर स्त्री से और स्त्री का पर पुरुष से सम्बन्ध व्यभिचार कहा जाता है जिसका प्रभाव पारिवारिक जीवन में कुछ वर्षों के बाद दिखाई देने लगता है। पहले पति पत्नी में कलह आरम्भ होती है और सामंजस्य न बैठने पर तलाक का कारण बनता है। इससे पहले जन्मे बच्चों का भविष्य अन्धेरों में घिर जाता है। व्यभिचार से मिलने वाला सुख कुछ मिनटों के लिए होता है साथ में मन

में भय भी रहता है कि पकडे न जाएँ लेकिन ये सम्बन्ध जीवन में कितनी कष्टदायक स्थितियों को उत्पन्न करते हैं।

आज-कल हमारे देश में धर्म के नाम पर कुछ कार्य पूरी रात भर चलते हैं जैसे उत्तर भारत के कुछ प्रदेशों में जगराते और गुजरात, राजस्थान आदि में नवरात्रों में गरबा। धर्म के नाम पर होने के कारण युवकों और युवतियों को घर से इनमें भाग लेने की स्वीकृति मिल जाती है। फिर वे मित्र समय कहाँ किन स्थितियों में बिताते हैं वे ही जानते हैं। इसी कारण इन्हीं दिनों में गर्भपात करवाने वालों की संख्या बहुत बढ़ जाया करती है। ऐसी व्यभिचार की अवस्थाएँ अधिक सम्पन्न परिवारों में आधुनिकता और नारी स्वतन्त्रता के नाम पर होती है। आजकल अधिकांश कार्यरत युवक और युवती सहमति से विवाह किए बिना ही इकट्ठे पति-पत्नी की तरह रहते हैं। यह युवावस्था का कुछ समय का स्वतन्त्र जीवन उनकी अगली जिन्दगी में अन्धेरा ला देता है।

व्यभिचार पुरुषों और महिलाओं में अनेक भयानक, जीवन का अन्तर कर देने वाले एड्स आदि रोगों का कारण बन रहा है। ये सभी कार्य प्रेम के नाम पर किए जाते हैं, किन्तु प्रेम शारीरिक नहीं होता उसका सम्बन्ध मन और आत्मा के साथ होता है। जो कभी कृष्ण-रुक्मिणी, राम-सीता में हुआ करता था। विद्यालयों, महाविद्यालयों में मन बहलाने की मित्रता होती है जिससे हमारी संस्कृति नष्ट होती जा रही है। कई बार इस मित्रता में विवाह करने के भी संकल्प किए जाते हैं, किन्तु इसी आड़ में जब सीमा लाँघ दी जाती है तो अधिकतर मित्रताएँ टूट जाया करती हैं। यदि किसी का विवाह हो भी जाए तो कुछ समय व्यतीत हो जाने के बाद मतभेद उभरने आरम्भ हो जाते हैं और कई विवाह टूट भी जाते हैं।

परिवार की मजबूती की नींव पति और पत्नी का एक दूसरे के प्रति समर्पण पर निर्भर करती हैं। समर्पण जितना अधिक होगा परिवार उतना ही सुखी और शान्त होगा। किन्तु युवावस्था में प्रेम का जो दिखावा किया जाता है वह परिवार या समाज को ही धोखा देना नहीं होता किन्तु अपने आप को भी धोखा देना होता है। प्रेम सुख, शान्ति समर्पण से होता है और समर्पण संयमी व्यक्ति का ही हो सकता है और संयम रहने पर ही ब्रह्मचर्य का पालन हो सकता है।

यदि रामायण का स्वाध्याय करें तो पता चलेगा कि रावण जब साधु वेष में सीता हरण करने के लिए आया था, उसने सीता से पूछा तुम्हारी आयु कितनी है। सीता ने बताया विवाह समय मैं अठारह वर्ष की थी बारह वर्ष हम अयोध्या रहे और अब तेरह वर्ष वन में हो गए हैं। सीता जी ने जब रामचन्द्र जी को वन में साथ जाने का आग्रह किया तो संकल्प लिया मैं १४ वर्ष तक वन में रहते ब्रह्मचर्य का पालन करुँगी। आज का कोई युवक-युवती ऐसी प्रतिज्ञा करने का साहस कर सकते हैं क्या? महाभारत के समय योगीराज श्री कृष्ण जी का विवाह रुक्मिणि से हुआ। कृष्ण जी ने रुक्मिणि से पूछा आप मेरे से क्या चाहती हैं तो रुक्मिणि ने कहा मुझे आप जैसे सुन्दर बलवान पुत्र को पाने की कामना है तो कृष्ण जी ने कहा- अब तक मैं युद्धों में व्यस्त रहा हूँ जिस कारण शारीरिक रूप से वीर्य के भी दुर्बल होने के कारण हमें ब्रह्मचर्य का पालन करते १२ वर्ष तपस्या करनी होगी। दोनों ने १२ वर्ष तक वनों में रहकर ब्रह्मचर्य पालन करते हुए तपस्या करने के बाद एक वीर पुत्र उत्पन्न किया जिसका नाम प्रद्युमन रखा। कहा जाता है कि जब पुत्र युवा हो गया तो कृष्ण और पुत्र दोनों शरीर से एक जैसे दिखाई देते थे और पहिचान के लिए ही रुक्मिणी ने कृष्ण जी के मुकुट में मोर पंख लगाया। रामायण काल में वीर हनुमान, महाभारत काल में भीष्म पितामह और महाभारत के बाद महर्षि दयानन्द में ब्रह्मचर्य के कारण होने वाले बल, तेज, वीर्य और शौर्य को सब जानते हैं।

जब सन्तान की कामना करके उसको कैसा होना चाहिए विचार कर गर्भ धारण किया जाता था और उसी के अनुसार माता-पिता का आहार, विचार व्यवहार होते थे, सन्तानें भी संस्कारी, चरित्रवान्, बुद्धिमान् हुआ करती थी। किन्तु आज सन्तान उत्पन्न नहीं की जाती, हो जाती है इसलिए रोकने के उपाए किए जाते हैं। कई बार तो सन्तान न हो के विचार से गर्भ हो जाने पर गर्भपात करवाए जाते हैं।

इन सब अवस्थाओं पर विचार करके हर युवक-युवती को युवावस्था की उत्तेजना को शान्त कर ब्रह्मचर्य पालन का संकल्प लेना चाहिए और अपने शरीर, मन, बुद्धि में बल, तेज, वीर्य को बढ़ा कर अपना जीवन शान्त और सुखमय बना कर परिवार, समाज, राष्ट्र के लिए प्रेरक बनना चाहिए। उसकी सम्भावना तभी हो सकती है जब हम पाश्चात्य जीवन की उन्मुक्त अवस्थाओं से प्रभावित न होवें अपितु इनसे उत्पन्न होने वाले एड्स आदि भयंकर रोगों को मन में बिठाकर इनसे बचने के लिए ब्रह्मचर्य का पालन कर गृहस्थ जीवन में प्रवेश करेंगे तो ही हम इस 'भूत' फैशन को नष्ट करके शान्त सुखी संसार का सपना सच कर पाऐंगे।

इन लेखों से यदि कुछ परिवार भी लाभ ले सकें तो मैं अपने आपको सौभाग्यशाली समझूँगा।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

ज्योतिष्टोम अग्निष्टोमाख्यस्य सोमयागस्य निरूपणम्

- सनत्कुमारः

महर्षि दयानन्द ने आर्योद्देश्यरत्नमाला में यज्ञ की परिभाषा करते हुये कहा है ''अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त वा जो शिल्पव्यवहार और पदार्थ विज्ञान है, जो कि जगत् के उपकार के लिये किया जाता है। उसको यज्ञ कहते हैं।'' महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट यज्ञ की इसी परिभाषा को आधार बनाकर के शतपथ आदि ब्राह्मण, श्रौतसूत्र एवं अथर्ववेद में अग्निहोत्र से आरम्भ करके अश्वमेध पर्यन्त इन २३ यज्ञों के नाम और उनमें मुख्य प्रकृतियाग अग्निष्टोम नामक सोमयाग का विज्ञान (एवं यज्ञ का आधिदैविक, आध्यात्मिक और आधिभौतिक स्वरूप, यज्ञ का अधिकारी, यज्ञ में प्रयुक्त द्रव्य, ऋत्विक्-संख्या, यज्ञ का फल, वेदों में यज्ञों की महिमा, यज्ञ के विभाग, यज्ञ एवं होम में अन्तर के साथ-साथ विधि) का प्रक्रिया सहित वर्णन किया गया है।

पिछले अंक का शेष भाग.....

महर्षि दयानन्द ने आर्योद्देश्यरत्नमाला में यज्ञ की परिभाषा करते हुये कहा है ''अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त वा जो शिल्पव्यवहार और पदार्थ विज्ञान है, जो कि जगत् के उपकार के लिये किया जाता है। उसको यज्ञ कहते हैं।'' महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट यज्ञ की इसी परिभाषा को आधार बनाकर के शतपथ आदि ब्राह्मण, श्रौतसूत्र एवं अथर्ववेद में अग्निहोत्र से आरम्भ करके अश्वमेध पर्यन्त इन २३ यज्ञों के नाम और उनमें मुख्य प्रकृतियाग अग्निष्टोम नामक सोमयाग का विज्ञान (एवं यज्ञ का आधिदैविक, आध्यात्मिक और आधिभौतिक स्वरूप, यज्ञ का अधिकारी, यज्ञ में प्रयुक्त द्रव्य, ऋत्विक्-संख्या, यज्ञ का फल, वेदों में यज्ञों की महिमा, यज्ञ के विभाग, यज्ञ एवं होम में अन्तर के साथ-साथ विधि) का प्रक्रिया सहित वर्णन किया गया है।

- एकरात्रो द्विरात्रः सद्यः क्री प्रक्रीरुक्थ्यः। ओतं निहितमुच्छिष्टे यज्ञस्याणूनि विद्यया।।

- चतूरात्रः पञ्चरात्रः षड्रात्रश्चोभयः सह। षोडशी सप्तरात्रश्चोच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वे ये यज्ञा अमृते हिताः।।

- प्रतिहारो निधनं विश्वजिच्चाभिजिच्चयः। साहनातिरात्रावुच्छिष्टे द्वादशाहोऽपि तन्मयि। (अथर्ववेदः ११-७-७-१२)

इत्यत्र राजसूयत आरभ्य द्वादशाह पर्यन्तमनेके यज्ञा वर्णिताः।

अन्यच्च- कात्यायनश्रौतसूत्रेऽपि त्रयोविंशतिर्यज्ञा निर्दिष्टाः।

यथा- १. अग्न्याधानम्, २. अग्निहोत्रम्, ३. दर्शपौर्णमासः, ४. दाक्षायणयज्ञः, ५. आग्रयणेष्टिः, ६. दर्विहोमः, क्रैडिनीयेष्टिः, आदित्येष्टिः, मित्रविन्देष्टिः, ७. चातुर्मास्यानि, ८. निरूढपशुबन्ध, ९. सोमयागः, १०. एकाहः, ११. द्वादशाहः, १२. सत्रम्, १३. गवामयनम्, १४. वाजपेयः, १५. राजसूयः, १६. अग्निचयनम्, १७. सौत्रामणिः, १८. अश्वमेधः, १९. पुरुषमेधः, २०. अभिचार यागः, २१. अहीनातिरात्रः, २२. सत्रम् (द्वादशाहत आरम्य सहस्रवर्षपर्यन्तम्), २३. प्रवर्ग्यः।

उल्लिख्य यज्ञानीदानीं यज्ञविज्ञानं व्याख्यास्यामः।

यज्ञविज्ञानम्- यज्ञस्य प्रकारद्वयमेकस्तु प्राकृत द्वितीयस्तु कृत्रिमः। कृत्रिमयज्ञस्य स्वरूपं तु ''द्रव्यदेवता त्यागो यागः'' इदमेव वर्त्तते खलु। अत्र विचार्यते- देवतोद्देशेन द्रव्यस्य त्याग एव यागः खलु। भवतु नाम? तेन त्यागेन देवस्य को लाभः? एष त्यागः कथं कर्तारं फलेन योजयति? एवं बहवीनां जिज्ञासानां समाधानं प्राकृतयज्ञः कर्तुं शक्नोति नान्यत् कश्चिदपि।

एतैः कृत्रिमैर्यज्ञैर्जगतः प्रतिकूलमपि प्राकृतं यज्ञमनुकूलं कर्तुं शक्नुमः। अनेन हेतुना प्राणिमात्रस्य कल्याणकामनया यज्ञान् चक्रुः ऋषयः। अपि च सृष्टे निर्माणज्ञापनाय अर्थात् देवाः कथं सृष्टिं निर्मापितवन्त एतद् ज्ञापनाय। कथमित्युक्ते मन्त्रः प्रदर्शयते-

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। ऋ. १-१६४.५

अर्थात् - देवा (यजमानाः) निर्मथ्याग्निना यज्ञं होमसाधनमाहवनीयमनुष्ठानाय संयोजितवन्तः तानि धर्माणि- अग्निसाधनानि कर्माणि प्रकृष्टतमान्यासन् (फलप्रसव समर्थान्यभवत्) माहात्म्ययुक्ता देवा नाकं समसेवन्त। कीदृशं नाकम्? यत्र पूर्वतनाः साध्याः साधना यज्ञादि साधनवन्तः (कर्मदेवा इत्यर्थः) ते निवसन्ति तं सचन्त। (आदित्या अंगिरश्च साध्या देवा उच्यन्ते) साधनानि तु- अग्निः पशुरासीत् तेनायजन्तः। वायुः पशुरासीत् तेनायजन्तः।

सूर्यः पशुरासीत् तेनायजन्तः। अर्थादग्निः पशुः सृष्टियज्ञे

देवानामासीत्।

अन्यच्च- 'यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मशरद्धविः।' अनेन मन्त्रेणापि सृष्टियज्ञविषय एवोक्तम्।

स्थूल विज्ञाने तु यज्ञस्वरूपमग्निसोमात्मकं वर्त्तते। अर्थाद् निखिलोऽयं ब्राह्माण्डोऽग्नौ सोमस्याहुतिदान एव स्थितः। अयं सोमः सर्वत्र व्याप्तः सूक्ष्मतम आप एव खलु। आगाररहितत्वात्। अपि चायमेव जनिता तत्वानामुक्तञ्च वेदेन-

- सोम पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः।

जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः।। (ऋ.सं. ९-९६-५)

यज्ञस्य प्रकारत्रयम्- आध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिकश्च। त्रयाणां व्याख्या क्रियते।

१. आध्यात्मिकः - अस्माकं शरीरे यत् प्राणाग्निहोत्ररूपी यज्ञो भवति।

२. आधिदैविकः - सूर्यं वा अग्निहोत्रम्। सोमेन आदित्या बलिनः। इत्यादिवाक्यैर्ज्ञायते यत् सोमाहुतिद्वारा सूर्य ऊर्जा वर्त्तते।

३. आधिभौतिकः - गर्भाशयस्थाग्नौ शुक्ररूपी सोमस्याहुतिद्वारा गर्भोत्पत्तिः। अन्यच्च चतुर्थोऽप्यधियज्ञरूपेण वर्त्तते यदस्माभि र्भूमौ क्रियते।

एतेषु निखिलेषु यज्ञेषु- अग्नौ सोमस्याहुतिस्तु समाना पुनरपि सोमस्य स्थुलः सूक्ष्मः सूक्ष्मतमोऽवस्था कारणाद् भेदस्तु विद्यते खलु।

- ऋतुषु परिवर्त्तनमपि-अग्नौ सोमस्य न्यूनाधिकाहुति कारणादेव।

सोमः कुत्र वर्त्तते? उक्तञ्च वेदेन- ''अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहितः।'' (अथर्व. १४.१.२) दिवि सोमोऽधिश्रितः। सोमो राजा मस्तिष्कः (अथर्व. ९/७/२) सोम पयः (श. १२/७.३-१३)

भूमौ लताविशेषस्सोमः- कृत्रिमे यागे (सोमयागे) तु लताविशेषस्सोमो न केवलं यागार्थं द्रव्यम्, किन्तु दिव्यौषधिरपि। स सुतरां पवित्रतमः। परं बलपुष्टिहर्षादिसम्पादकः। अनेक शतवर्षाणि जीवयति पातारम्, अरोगिणं दीर्घदृष्टिं च करोति। वेदेषु सर्वत्रास्योत्साहजनकता हर्षवर्द्धकतेत्येव श्रूयते।

सुश्रुत संहितायां सोमलताभेदा गुणाश्च- सोमलतायाः वैशिष्ट्यं सुश्रुतसंहितायां महर्षि सुश्रुतेन विस्तरेण मुख्यरसायनरूपेण वर्णितम्। यथा- ''अथातः स्वभावव्याधिप्रतिषेधनीयं रसायनं व्याख्यास्यामः।'' (स्वभावप्रवृत्तानां क्षुत्पिपासाजरामृत्युनिद्राप्रभृतीनां व्याधीनां प्रतिषेछनम्) इत्ति सन्दर्भे भगवान् धन्वन्तरिः ''व्याधिजरामृत्युविनाशाय सोमलता सर्जनं ब्रह्मैव चकार'' इत्युक्तवान् अन्यच्चौक एव खलु भगवान् सोमः स्थाननामाकृतिवीर्यविशेषैपूचतुर्विंशतिधा विद्यते। (सु.सं.चि. स्थान- २९-४)

तद्यथा- अंशुमान् मुञ्जवांश्चैव चन्द्रमा रजतप्रभः। दूर्वासोमः कनीयांश्च श्वेताक्षः कनकप्रभः।।५।।

प्रतानवांस्तालवृन्तः करवीरोंऽशवानपि। स्वयंप्रभो महासोमो यश्चापि गरुडाहतः।।६।।

गायत्रस्त्रैष्टुभः पाङ्क्तो जागतः शाक्वरस्तथा। अग्निष्टोमो रैवतश्च यथोक्त इति संज्ञितः।।७।।

गायत्र्या त्रिपदा युक्तो यश्चोडुपतिरुच्यते। एते सोमाः समाख्याता वेदोक्तैनर्मिभिः शुभैः।।८।।

सोमपानेन लाभास्तु बहवो भवन्ति, तेषु अल्पाः प्रदर्शयन्ते।

कन्दर्प इव रूपेण कान्त्या चन्द्र इवापरः। प्रह्लादयति भूतानां मनांसि स महाद्युतिः।।१८।।

साङ्गोपाङ्गांश्च निखिलान् वेदान् विन्दति तत्त्वतः।

चरत्यमोघसङ्कल्पो देववच्चाखिलं जगत्। (सु.सं.चि. २९-१९)

सोमलता-लक्षणम्- सोमलता बहुप्रकारिका भवन्ति। तद्यथा-

* सर्वेषामेव सोमानां पत्राणि दशपञ्च च। तानि शुक्ले च कृष्णे च जायन्ते निपतन्ति च।

* एकैकं जायते पत्रं सोमस्याहरहस्तदा। शुक्लस्य पौर्णमास्यां तु भवेत् पञ्चदशच्छदः।।

* शीर्यते पत्रमेकैकं दिवसे दिवसे पुनः। कृष्णपक्षक्षये चापि लता भवति केवला।।

* अंशुमानाज्यगन्धस्तु कन्दवान् रजतप्रभः। कदल्याकारकन्दस्तु मुञ्जवाल्लशुनच्छदः।।

* चन्द्रमाः कनकाभासो जले चरितसर्वदा। गरुडाहृतनामा च श्वेताक्षश्चापि पाण्डुरौ।।

* सविनिर्मोकसदृशौ तौ वृक्षाग्रावलम्बिनौ। तथाऽन्ये मण्डलैश्चित्रैश्चित्रिता इव भान्ति ते।

* सर्वे एव तु विज्ञेयाः सोमाः पञ्चदशच्छदाः।

क्षीरकन्दलतावन्तः पत्रैर्नानाविधैः स्मृताः।।

सोमलता कुत्र लभ्यते? उच्यते-

* हिमवत्यर्बुदे सहये महेन्द्रे मलये तथा। श्री पर्वते देवगिरौ गिरौ देवसहे तथा।।

* पारियात्रे च विन्ध्ये च देवसुन्दे ह्रदे तथा। उत्तरेण वितस्तायाः प्रवृद्धा ये महीधराः।।

* पञ्चतेषामधो मध्ये सिन्धुनामा महानदः।

हठवत् प्लवते तत्र चन्द्रमाः सोमसत्तमः।।

* तस्योद्देशेषु चाप्यस्ति मुञ्जवानंशुमानपि। काश्मीरेषु सरो दिव्यं नाम्ना क्षुद्रकमानसम्।।

* गायत्र त्रैष्टुभः पाङ्क्तो जागतः शाक्वरस्तथा।

अत्र सन्ति-अपरे चापि सोमाः सोमसमप्रभाः।। (सु.सं.चि. २९-२७ सं. ३१)

इति सुश्रुतानुसारेण सोमलतायाः परिचयः।

ब्रह्मणग्रन्थेषु यज्ञविज्ञानम् -

१. स (सोमः) तायमानो जायते स यन्जायते तस्माद्यज्ञो यज्ञो ह वै नामैतद् यद् यज्ञ इति।

२. यज्ञो वै भुज्युः (यजु. १८.४२) यज्ञो हि सर्वाणि भूतानि भुनक्ति। (श. ९.४, १-१९)

३. यज्ञो वा ऋतस्य योनिः। (श. १.३.४.६)

४. एष ह वै महान् देवो यद्यज्ञः। (गो.पू. २-१६)

५. यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म। (श. १.७.१.५)

६. ब्रह्म वै यज्ञः। (ऐ.ब्रा. ७-२२)

७. सैषा त्रयी विद्या (=ऋक्सामयजूंषि) यज्ञः (श. १-१-४३)

८. एष वै प्रत्यक्षो यज्ञो यत्प्रजापतिः। (श. ४/३/४.३)

९. इन्द्रो यज्ञस्यात्मा। (१-९/५/१.३)

११. तदाहुः किन्देवत्यो यज्ञ इति। ऐन्द्र इति ब्रूयात्। (गो.उ. ३-२३)

१२. यज्ञो वै विष्णुः। (श. १३-१-८-८)

१३. यज्ञ उ देवानामन्नम्। (श. ८-१-२-१०)

१४. वाग्वै यज्ञः। (ऐ. ४-२४)

१५. अयं वै यज्ञो योऽयं (वायुः) पवते। (ऐ. ४.३३)

१६. स यः स यज्ञोऽसौ स आदित्यः। (श. १४/१/१/६)

१७. आत्मा वै यज्ञस्य यजमानोऽङ्गान्यृत्विजः। (श. ९-५-२-१६)

१८. आत्मा वै यज्ञः। (श. ६-२-१-७)

१९. पुरुषो वै यज्ञस्तस्य शिर एव हविर्धानं मुखमाहवनीयः उदरं सदः अन्तरुक्थानि, बाहू मार्ज्जालीयश्चाग्नीध्रीयश्च, या इमा देवतास्तेऽन्तः सदसं धिष्ण्याः, प्रतिष्ठे गार्हपत्यव्रतश्रपणाविति। (गो.उ. ५/४)

२०. यज्ञो वै भुवनस्य नाभिः। (तै. ३/९/५-५)

२१. आपो वै यज्ञः। (ऐ. २-२०)

२२. अजातोह वै तावत्पुरुषो यावन्न यजते स यज्ञेनैव जायते। (जै.उ. ३/१४/८)

शेष भाग अगले अंक में....

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

पिछले अंक का शेष भाग.....

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
८८.	सौवर	५.००
८९.	पारिभाषिक	२०.००
९०.	धातुपाठ	
९१.	गणपाठ	२०.००
९२.	उणादिकोष	
९३.	निघण्टु	१५.००
९४.	संस्कृतवाक्यप्रबोध	
९५.	व्यवहारभानुः	१२.००
९६.	निरुक्त (मूल)	८०.००
९७.	अष्टाध्यायी (मूल)	२०.००
९८.	अष्टाध्यायीभाष्य प्रथम भाग सजिल्द	१२०.००
९९.	अष्टाध्यायी भाष्य द्वितीय भाग सजिल्द	१००.००
१००.	अष्टाध्यायी भाष्य तृतीय भाग सजिल्द	१३०.००

डॉ. भवानीलाल भारतीय

१०१.	महर्षि दयानन्द– आत्मकथा	
१०२.	उपदेश मंजरी (पूना प्रवचन)	
१०३.	परोपकारिणी सभा का इतिहास	
१०४.	आर्यसमाज के पत्र और पत्रकार	१०.००
१०५.	आर्य नरेश राजाधिराज सर नाहरसिंह वर्मा	८.००
१०६.	दयानन्द–सूक्ति–मुक्तावली	१५.००
१०७.	देशभक्त कुँ.चाँदकरण शारदा	५.००
१०८.	दयानन्द वचनामृत	३.००
१०९.	आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी	१०.००

वेदगोष्ठी– सम्पादक डॉ. धर्मवीर

११०.	ऋषि दयानन्द की वेदभाष्य शैली	२०.००
१११.	वेद और कर्मकाण्डीय विनियोग	३१.००
११२.	अथर्ववेदः समस्याएं और समाधान	३५.००
११३.	वेद और विदेशी विद्वान् – कृतित्व और दृष्टिभेद	३५.००
११४.	वेदों के आख्यान (प्रथम भाग)	३५.००
११५.	वेदों के दार्शनिक विचार	४०.००
११६.	सोम का वैदिक स्वरुप	५०.००
११७.	पर्यावरण का वैदिक स्वरुप	
११८.	वेद और समाज	
११९.	वेद और राष्ट्र	
१२०.	वेद और विज्ञान	
१२१.	वेद और ज्योतिष	८०.००
१२२.	वेदों में पदार्थ विद्या (विशेषांक–१)	५०.००
१२३.	वेदों में पदार्थ विद्या (विशेषांक–२)	५०.००
१२४.	वेद और निरुक्त	१००.००
१२५.	वेद और इतिहास	१००.००
१२६.	वेद में कृषि व वनस्पति विज्ञान	१००.००
१२७.	वेद और शिल्प	
१२८.	वेदों में अध्यात्म	
१२९.	वेदों में राजनैतिक विचार	१००.००
१३०.	वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है	
१३१.	वैदिक समाज विज्ञान	
१३२.	सत्यार्थ प्रकाश ७वाँ समुल्लास और वेद	
१३३.	सत्यार्थ प्रकाश ८वाँ समुल्लास और वेद	

प्रो. धर्मवीर

१३४.	आर्यसमाज और शोध	१५.००
१३५.	महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र	

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
	स्वामी विष्वङ् परिव्राजक	
१३६.	ध्यान योग एवं रोग निवारण	१५०.००
१३७.	योग	५०.००
१३८.	अष्टाङ्ग योग	२०.००
१३९.	समाधि	१००.००
	स्वामी अभयानन्द सरस्वती	
१४०.	प्राणायाम चिकित्सा	
	डॉ. सत्यदेव आर्य	
१४१.	वैदिक सन्ध्या मीमांसा	२५.००
१४२.	ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना मन्त्रों का विवेचन	२५.००
१४३.	तन्मेमनःशिवसंकल्पमस्तु का वैज्ञानिक विवेचन	२५.००
	विरजानन्द दैवकरणि	
१४४.	प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत	८.००
१४५.	महाभारत युद्ध कब हुआ एवं अन्य रचनाएँ	५.००
	वैद्य पंडित ब्रह्मानन्द त्रिपाठी	
१४६.	बूंदी शास्त्रार्थ	५.००
१४७.	वैदिक सूक्ति–सुमन	२५.००
	वैदिक साहित्य – विविध ग्रन्थ	
१४८.	दयानन्द ग्रन्थमाला तीन खंड का १ सेट	५५०.००
१४९.	आर्य समाज की मान्यताएं	२०.००
१५०.	मानव निर्माण के स्वर्ण सूत्र	१५.००
१५१.	अथर्ववेदीय पञ्चपटलिका (सजिल्द)	२५.००
१५२.	अथर्ववेदीय पञ्चपटलिका अजिल्द	१५.००
१५३.	ऋग्वेद का नमूना भाष्य (१मंत्र)	४.००
१५४.	ईशादिदशोपनिषद् (मूल)	१०.००
१५५.	वैदिक कोषः (निघण्टु मणिमाला)	२५.००
१५६.	सरस्वती की खोज एवं महाभारत युद्धकाल	१०.००
१५७.	दयानन्द दिव्य दर्शन	१२.००
१५८.	वृक्षों में जीवात्मा	१०.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१५९.	महर्षि दयानन्द जीवन और सन्देश	३.००
१६०.	महर्षि महिमा	२.००
१६१.	स्वामी दयानन्द चरितम्	१०.००
१६२.	ब्रह्माकुमारी मत खण्डन	८.००
१६३.	निरुक्तकार का ऐतिहासिक पक्ष	५.००
१६४.	मांसाहार– वैदिक धर्म एवं विज्ञान	१२.००
१६५.	नेपाली सत्यार्थ प्रकाश	२००.००
१६६.	परोपकारी विशेषांक	२५.००
१६७.	महर्षि दयानन्द के चित्र (एक प्रति)	५०.००
१६८.	संगठन सूक्त	२.००
१६९.	३१ दिवसीय टेबल कलेण्डर	१००.००
१७०.	प्यारा ऋषि	२५.००
१७१.	नककटा चोर	३०.००
१७२.	महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायी	३५.००
१७३.	स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके क्रान्तिकारी शिष्य	३५.००
१७४.	भगवान् को क्यों मानें ?	२५.००
१७५.	महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय	३०.००
१७६.	आर्यसमाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक–महर्षि दयानन्द सरस्वती	२५.००
१७७.	शेख चिल्ली और लाल बुझक्कड़	२५.००
१७८.	नैति मंजूषा	९५०.००
१७९.	ऋग्वेदादि संदेश	३०.००
१८०.	त्याग की धरोहर	१००.००
	ध्यान योग एवं रोग निवारण (सी.डी.)	
	(स्वामी विष्वङ् परिव्राजक)	
१८१.	अष्टांग योग–१ (सी.डी.)	
१८२.	अष्टांग योग–२ (सी.डी.)	
१८३.	आसन (सी.डी.)	
१८४.	सूक्ष्म व्यायाम (सी.डी.)	

शेष भाग अगले अंक में.....

वेद – मानव मात्र के लिए

- सुधा सावन्त

सृष्टि के आरम्भ में परम पिता परमात्मा ने मानव मात्र के लिए ऋषियों के माध्यम से, सुचारु रूप से, जीवन चलाने के लिए ज्ञान दिया, वही ज्ञान, वेद मन्त्रों के रूप में हमारा मार्ग दर्शन करता है। वेदों का यह ज्ञान ईश्वर ने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के रूप में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा के हृदय में प्रकाशित किया था। यह ज्ञान मानव मात्र के लिए है। वेद के प्रचार-प्रसार की कोई सीमा नहीं है, न भौगोलिक, न क्षेत्रीय और न ऐतिहासिक। कोई भी मनुष्य, बालक-बालिका या किसी जाति या प्रदेश के लोग किसी भी मत या सम्प्रदाय के लोग, जो भी ज्ञान प्राप्त करना चाहें उन सभी को वेद पढ़ने का अधिकार है।

मानव के इतिहास में जब अन्धकार युग आया तो कुछ कम पढ़े लिखे लोगों ने जो घोर अन्धविश्वासी थे, उन्होंने वेद के प्रचार-प्रसार में अवरोधक का काम किया। स्वयं अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली। उन्होंने कहा-स्त्री और शूद्र को वेद पढ़ने की अनुमति नहीं है। यह उनका मिथ्या प्रचार था। आज भी लोग ऐसे विचार की निन्दा करते हैं।

आर्योदयः- अन्धकार, अज्ञान और अन्ध-विश्वास की बीच झूलते हुए भारतवासियों ने अपने धर्म, संस्कृति और विश्वासों को जैसे गिरवी रख दिया था। पौगापन्थी पण्डितों ने समुद्रपार जाने वालों को जाति से बाहर कर देने की धमकी देना आरम्भ किया। इस तरह भारतवासियों को कूप-मण्डूक बना दिया। जब अन्य देशों से ज्ञान का आदान-प्रदान, व्यापार और शस्त्रों के अनुसन्धान पर रोक लग गई तो देश की स्थिति बद से बदतर होती गई। अनेक युद्धों में भारतवासियों को पराजय का दुःख सहना पड़ा। धर्म, संस्कृति और परम्पराओं पर बार-बार कुठाराघात होने से भारत देश छिन्न-भिन्न होने लगा।

ऐसी स्थिति में भारत के गुजरात के टंकारा ग्राम में एक बालक का जन्म हुआ। नाम रखा गया मूलशंकर। बालक ने छोटी आयु में ही यजुर्वेद कण्ठस्थ कर लिया और अन्य वेद-वेदांगों के अध्ययन में भी तत्परता दिखाई। इसी बीच १४ वर्ष की आयु में टंकारा के शिव मन्दिर में परिवारजनों एवं इष्टमित्रों के साथ बालक मूलशंकर ने महाशिवरात्रि का व्रत रखा, मन्दिर में लगातार एकटक वे शिवलिंग की ओर देखते रहे। पिता ने कहा था कि जो बालक पूरी रात सोएगा नहीं, व्रत रखेगा, उसको भगवान शिव साक्षात् रूप में दर्शन देंगे।

पिता और अन्य वयस्कजन तो आधी रात होते-होते निद्रा की गोद में समा गए। केवल दृढ़ निश्चयी मूलशंकर जागते रहे। ऐसे में एक चुहिया उछलती-कूदती आई और शिवलिंग पर चढ़ाए गए पत्र, पुष्प व प्रसाद को खाने लगी।

बालक मूलशंकर को ईश्वरीय ज्ञान हुआ। उन्होंने सोचा कि यह पत्थर का शिवलिंग जो चुहिया से अपनी रक्षा नहीं कर सकता वह संसार की रक्षा क्या करेगा। यह प्रश्न उनके मन में बारबार कौंधता रहा। मूलशंकर ने सच्चे शिव के खोज में २२ वर्ष की अवस्था में गृह त्याग दिया। सच्चे गुरु की खोज में जगह-जगह घूमते रहे। छत्तीस वर्ष की आयु में वे मथुरा में गुरु विरजानन्द जी से मिले। उन्होंने उन्हें पाणिनी व्याकरण पढ़ाया, वेदों का ज्ञान दिया और गुरु दक्षिणा में शिष्य से कहा:

''जाओ और शुद्ध सनातन वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करो।''

स्वामी दयानन्द सरस्वती पहले ऐसे आर्य संन्यासी हुए जिन्होंने तालाबन्द वेद ग्रन्थों को बाहर जन-साधारण के सामने प्रस्तुत किया। उन्होंने वेदों का भाष्य सरल संस्कृत और हिन्दी में किया। यह एक ऐतिहासिक घटना थी। इससे सभी मनुष्यों तक वेदों का ज्ञान पहुँच सका।

हमें यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती के हिन्दी भाष्य को पढ़कर, वेद मन्त्रों पर मनन करके समाज के उपेक्षित नर-नारी भी अपने जीवन को उन्नत बना सके। समाज धर्म पथ पर चलने लगा स्वामी दयानन्द ने कहा कि हर व्यक्ति को, चाहे वह किसी भी वर्ण का या वर्ग का हो, भारतीय हो या विदेशी हो, स्त्री हो या पुरुष हो, सभी को वेद पढ़ने व पढ़ाने का अधिकार है। ज्ञान को ताले में बन्द करना अधर्म है। समाज में किसी को भी वेद के पठन-पाठन से वञ्चित करना अधर्म है। अनार्य कर्म है।

वेदों में क्या है- ऋग्वेद के मन्त्र ज्ञान से परिपूर्ण है। ऋग्वेद में १०,५८९ (दस हजार पाँच सौ नवासी) मन्त्र हैं

और वे दस मण्डलों में विभाजित हैं। इनके पठन-पाठन से व वेद मन्त्रों के अर्थ पर मनन करने से वेद पाठी की विचार शैली भी वैज्ञानिक हो जाती है और वह अन्ध-विश्वासों से अपने आप ऊपर उठ जाता है। मन्त्र केवल कर्मकाण्ड के लिए नहीं हैं वरन् व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक जीवन एवं राष्ट्रीय जीवन के लिए भी मार्गदर्शक हैं। वेद पाठियों का देश व समाज सुरक्षित रहे, संगठित रहे व शत्रु को परास्त करे, इसकी भी शिक्षा इन मन्त्रों के माध्यम से दी जाती है। ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त को संगठन सूक्त कहते हैं, क्योंकि यह मानव समाज को संगठित रखने की प्रेरणा देता है।

यर्जुर्वेद में १९७५ (एक हजार नौ सौ पिछत्तर) मन्त्र हैं। यजुर्वेद को कर्मकाण्ड का निर्देशक बताया गया है। मन्त्र और यज्ञ में समन्वय की बात कही गई है। ईश्वर को अपने अन्त:करण में समझने के लिए मन्त्र मार्ग-दर्शक हैं। मनुष्य के लिए क्या अच्छा है क्या बुरा, इसकी विवेचना भी मन्त्र सिखाते हैं। मन्त्र बताता है कि जो भद्र है उसे हम अपनाएँ और जो दुरित है, प्रगति में बाधक है उसे अपने से दूर रखें।

सामवेद परमात्मा और आत्मा के मिलन का गायन करता है। सामवेद में १८७५ (अठारह सौ पिछत्तर) मन्त्र हैं। सा का अर्थ है परमात्मा और अम् का अर्थ है जीवात्मा। सामवेद परमात्मा और जीवात्मा के मिलन का मार्ग दिखाता है।

अथर्ववेद में ५९७७ (पाँच हजार नौ सौ सत्तत्तर) मन्त्र हैं। इसे विज्ञानकाण्ड कहते हैं। वेद मन्त्र मनुष्य को मार्ग दिखाते हैं कि वह सन्मार्ग पर कैसे चले कि जिससे आत्मा का मिलन परमात्मा से हो सके। प्रकृति किन नियमों के अनुसार कार्य करती है, आत्मा-परमात्मा, जीवन-मृत्यु के क्या रहस्य हैं? इन सब का ज्ञान हमें वेद मन्त्रों के पढ़ने व मनन करने से प्राप्त होता है।

वेद पाठी के जीवन का आधार हो जाता है सत्य एवं धर्म। उपनिषद् में स्पष्ट कहा है-''**सत्यं वद, धर्मं चर**'' जो मनुष्य सत्य को धारण करते हुए धर्म के मार्ग पर चलता रहेगा, उसका जीवन सफल व पूर्ण होगा वह जन्म और मृत्यु के चक्र से छूट कर मोक्ष को प्राप्त करेगा, परमानन्द को प्राप्त करेगा।

''उपवन'', ६०९ सेक्टर २९, नोयडा-
२०१३०३ दूरभाष: ०१२०- २४५४६२२

मोदी सर्वत्र मोदते

- डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री

भ्रष्टा: पराजिता: सर्वे जातिवाद: पराजित:।
अल्पसंख्यकवर्गाणां तुष्टिवाद: पराजित:।।

उत्कोच-संस्कृतिर्नष्टा कुव्यवस्था पराजिता।
सत्ता-केन्द्र-द्वयं नष्टम् इति मन्यामहे वयम्।।

सामान्येऽपि कुले जात: सामान्य: कर्मणा जन:।
महतीं पदवीं देशे प्राप्तुं शक्नोति निश्चितम्।।

बसपाया गजस्तावत् प्रविश्य पाङ्कजे वने।
पङ्के निमग्नतां प्राप्य सहसैव दिवंगत:।।

सपा-द्विचक्रिकाऽऽरूढा: सर्वे प्रत्याशिनस्तथा।
पङ्के तथैव संलग्ना: नूनं निश्चलतां गता:।।

पराजयस्य य: षङ्को मुखे गाढं समाश्रित:।
तस्य प्रक्षालने हस्ता: व्यस्ता: कांग्रेसकर्मिणाम्।।

नराणामिह सर्वेषां प्रिय: सात्त्विक-शासक:।
इन्द्रत्वं सहसा प्राप्य 'नरेन्द्र:' समवर्त्तत।।

संस्कृतेर्भारतीयाया: पोषको राष्ट्रचिन्तक:।
कांग्रेस-शासनं देशे ध्वस्तीकृत्य समुत्थित:।।

वंशवाद: स्वतो ध्वस्त: महानिर्वाचनेऽधुना।
उत्साहस्य नव: सूर्यो राजनीतौ समुत्थित:।।

भाजपा-विजयं दृष्ट्वा हृष्यन्ति राष्ट्र-चिन्तका:।
शत्रवश्चिन्तिता: किन्तु किमाश्चर्यमत: परम्।।

वयं मोदामहे सर्वे राष्ट्रोत्थानसमुत्सुका:।
महानिर्वाचनस्याऽस्य परिणामेन सर्वथा।।

राजस्थाने महाराष्ट्रे दिल्लीप्रान्तेऽथ गुर्जरे।
बिहारे मध्यदेशे वा मोदी सर्वत्र मोदते।।

धर्माणां निरपेक्षाऽस्ति खलु या छद्मा सदा भारते,
सा ध्वस्ता ननु सम्प्रदाय-बहुला सौजन्यता राजताम्।

सद्वृत्तिस्त्वपराजिता भवतु सा नष्टा त्वकर्मण्यता,
मोदी संस्कृतिरक्षको विजयताम् इत्येवमाशास्महे।।

- रायबरेली

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१ से १५ जुलाई २०१४ तक)

१. श्री राजीव यादव, बीकानेर, राज. २. श्री विरदीचन्द गुप्त, जयपुर, राज. ३. श्री आनन्द मुनि, हिसार, हरियाणा ४. श्री नन्दराम धाकड़, उज्जैन, मध्यप्रदेश ५. श्रीमती प्रतिभा व राजगुरु, अजमेर ६. श्री शशि आदर्श, दिल्ली ७. श्री राजसिंह दहिया, सोनीपत, हरियाणा ८. श्री सदोरोमल खुबानी, साहिबाबाद ९. श्री रमनलाल आर्य, बुरहानपुर, म.प्र. १०. जितेन्द्र प्रसाद शास्त्री, रेवाड़ी, हरियाणा ११. श्री वेदमित्र, जोधपुर, राज. १२. श्री लक्ष्मी नारायण आर्य, जोधपुर, राज. १३. श्री मुकेश आर्य, सहारनपुर, उ.प्र. १४. श्री शेलैष मोरवाल, अजमेर १५. श्री सतीश आर्य, दिल्ली १६. श्री रेत्तमलाल सोनीपत, हरियाणा १७. श्री कृष्णचन्द्र शर्मा, जयपुर, राज. १८. श्री मांगीलाल गोयल, अजमेर १९. श्री रजनीश कपूर, दिल्ली २०. श्री मदनसिंह त्यागी, गाजियाबाद २१. श्रीमती ज्योत्सना, अजमेर २२. श्री गोविन्द कुमार, अजमेर २३. सन्तोष खुराना, सोनीपत, हरियाणा २४. श्री धर्मदेव, रोहतक, हरियाणा २५. श्री नरपतसिंह आर्य, जालौर, राज. २६. गायत्री प्रोविजन, बुलदाना, महाराष्ट्र २७. श्री नवनीत राय, पाली, राज. २८. श्री गोपाललाल मण्डल, भीलवाड़ा, राज. २९. श्रीमती सन्तोष अरोड़ा, अजमेर ३०. श्री विनय कपूर, अजमेर ३१. श्री रमेशमुनि, अजमेर। **–परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों को निःशुल्क दिया जाता है। आप सभी गौ–भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१ से १५ जुलाई २०१४ तक)

१. श्रीमती रजती, दिल्ली २. श्रीमती इन्दुमति, झांझेर, हरियाणा ३. श्री रामफूल यादव, झांझेर, हरियाणा ४. श्रीमती सुमित्रा, झांझेर, हरियाणा ५. श्री अतुल कुमार गुप्ता, अलवर, राज. ६. श्री विरदीचन्द गुप्त, जयपुर, राज. ७. श्री शान्तिस्वरूप टिक्कीवाल, जयपुर, राज. ८. श्रीमती पुष्पा झंवर, ब्यावर, राज. ९. श्री राजेश त्यागी, अजमेर १०. श्री मोहनलाल जयसवाल, जयपुर, राज. ११. श्री दुष्यन्त किशोर, अजमेर १२. श्री शशि आदर्श, दिल्ली १३. श्री राधाकृष्ण, दिल्ली १४. श्री संदीप बूंदी, राज. १५. कोमल परवीन आर्य, जोधपुर, राज. १६. श्रीमती सुषमा सैनी, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. १७. कुमारी दीपिका सैनी, गुडगाँव, हरियाणा १८. श्रीमती हेमलता, नई दिल्ली १९. श्री सतीश कुमार आर्य, दिल्ली २०. श्री सदाशिव धाकड़, उज्जैन, म.प्र. २१. श्री अनिरुद्ध आर्य, दिल्ली २२. श्री शिवपूजन आर्य, दिल्ली २३. श्री कार्तिक, पानीपत, हरियाणा २४. श्री कुलकीत कुकरेजा, सोनीपत, हरियाणा २५. श्री ब्रह्मदत्त उख्खल, दिल्ली २६. श्री प्रेम शंकर शुक्ल, लखनऊ, उ.प्र. २७. श्रीमती प्रभा गुप्ता, अजमेर २८. श्री विश्रुत झंवर, ब्यावर, राज. २९. डॉ. सरिता स्वामी, नागौर, राज. ३०. श्री राधेश्याम महेश्वरी, अजमेर ३१. श्री नत्थीलाल, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश ३२. श्री बिहारी लाल, भिवानी, हरियाणा ३३. श्री विवेक कुमार गुप्ता, मेरठ, उ.प्र. ३४. श्री शास्त्री रमेश चन्द भारद्वाज, भिवानी, हरियाणा ३५. डॉ. श्यामलाल गुप्ता, प्रतापगढ़, उ.प्र. ३६. सन्तोष खुराना, सोनीपत, हरियाणा ३७. श्री कौशिक, सोनीपत, हरियाणा ३८. श्री झवेर सिंह आर्य, सहारनपुर, उ.प्र. ३९. श्री महेन्द्र कुमार साहू, अम्बेडकर नगर, उ.प्र. ४०. श्री कमल नेत्रा, मन्सा, पंजाब, ४१. श्री विवेक कुमार आर्य, अलवर, राज. ४२. श्री दयानन्द वर्मा, भीलवाड़ा, राज. ४३. श्री भंवरलाल सोनी, सुजानगढ़, राज. ४४. डॉ. सतीश शर्मा, अजमेर ४५. डॉ. स्वाति शर्मा, अजमेर ४६. श्री अशोक कुमार शर्मा, अजमेर ४७. श्री बलवीर सिंह बत्रा, अजमेर ४८. श्री घनश्याम राजपुरोहित, जोधपुर, राज. ४९. श्रीमती विमला पारीक, अजमेर।

–परोपकारिणी सभा, अजमेर।

निर्भय कैसे बनें?

– सुकामा आर्या

हम सभी प्रकार के जीवों में हर क्षण किसी न किसी प्रकार का भय बना रहता है। अनिश्चितता, असुरक्षा की भावना सूक्ष्म स्तर पर तो अवश्य ही रहती है। यह भय कुछ वस्तुओं, व्यक्तियों या परिस्थितियों से सम्बन्धित हो सकता है- धन से, पद-प्रतिष्ठा से, नौकरी से, परिवार से, सगे-सम्बन्धियों से, सरकार से, दुष्टों से, प्राकृतिक आपदाओं से, यह सूची व्यक्ति-व्यक्ति पर निर्भर करते हुए अत्यन्त दीर्घ भी हो सकती है और नहीं तो भविष्य को लेकर एक सामान्य भय तो प्रायः सभी में रहता है। कल क्या होगा? मेरा भविष्य क्या होगा? मेरा स्वास्थ्य ठीक रहेगा? ये सुख-सुविधाएँ बनी रहेंगी?

ध्यान में बैठकर चिन्तन यहाँ से प्रारम्भ करें। जीवन में स्थाई तो कुछ भी नहीं है। हम जिन व्यक्तियों में, परिस्थितियों में सुरक्षा महसूस करते हैं, वह वास्तविक सुरक्षा नहीं है। धन में सुरक्षा महसूस होती है, वह कभी भी नष्ट हो सकता है, लूटा जा सकता है। बच्चों में सुरक्षा महसूस होती वे कभी भी घर से दूर विद्याध्ययन या नौकरी के लिए जा सकते हैं। किसी व्यक्ति विशेष में खास स्नेह है, उसके विचारों में परिवर्तन से वह व्यक्ति बदल सकता है, उसके मन में अविश्वास पैदा हो सकता है। भय की अनिश्चिन्तता की चरम सीमा देखिए-

चाहने वाला मर ही न जाए कहीं।

मृत्यु से तो हम किसी को नहीं बचा सकते। मृत्यु ने तो हमें सबसे अलग करना ही है। यह अटल सत्य है। बस विचारधारा को मन में अच्छे से स्थापित करें कि मुझे इन व्यक्तियों पर, वस्तुओं पर, परिस्थितियों पर आधारित, निर्भर नहीं रहना है। पास में है तो ठीक है, नहीं है तो भी ठीक है-

राजी है हम उसी में, जिसमें तेरी रजा है।
यां यूँ भी वाह-वाह है, वां वू भी वाह-वाह है।।

ये हमेशा से रहने वाला भय कब समाप्त होता है? ये जीवन के प्रति आशंकाएँ कब विराम पाती हैं? जब हम ईश्वर को न्यायकारी व सर्वशक्तिमान् मान लेते हैं, समझ लेते हैं, विचार लेते हैं, अनुभव कर लेते हैं। हाँ, वह न्यायकारी है! हाँ, वह सर्वशक्तिमान् है! ऐसा हमें दृढ़ निश्चय हो जाता है।

वह बिना गति किए, बिना हिले-डुले सृष्टि बना देता है, सब व्यवस्थाएँ कर देता है, इसको देखकर उसकी शक्ति, सामर्थ्य का अन्दाजा हो जाता है।

परमपिता परमेश्वर तूने किस भाँति संसार रचा?
स्वयं विधाता निराकार तूने जग कैसे साकार रचा?

परमपिता परमेश्वर न्यायकारी भी है। कोई न्यायकारी तो हो पर उसके पास शक्ति न हो तो वह न्याय कैसे करेगा? ये दोनों गुण एक दूसरे को पुष्ट करते हैं। ''वह सर्वशक्तिमान् है तभी वह न्यायकारी है, वह न्यायकारी है क्योंकि वह सर्वशक्तिमान् है।''

जीवन में जब भी विकट परिस्थितियाँ आएँ, अनिश्चितता हो, मन में भय हो, आतंकित महसूस करें तो ईश्वर-प्राणिधान बना कर इन दोनों गुणों पर चिन्तन करें। कैसे थोड़ा सा धार्मिक व्यक्ति भी जीवन में न्यायपूर्ण व्यवहार करता है, तो ईश्वर तो धर्म का शुद्ध स्वरूप है। सारे भय, ईश्वर को न्यायकारी महसूस करने से हट जाएंगे। जब हमने सही तरीके से जीवन जिया है, अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह किया है, ईमानदारी से सेवाएँ दी हैं, यथासम्भव सब को सहयोग दिया है, बड़े-बुर्जुगों की सच्चे हृदय से सेवा की है तो डर काहे का? क्या हमें कर्म फल व्यवस्था पर विश्वास नहीं है? नहीं है तो पैदा करना होगा। यह विश्वास ही निर्भयता लाता है। मैं सही रहा हूँ, मेरा व्यवहार, चरित्र, कार्य सही मापदण्ड के अनुसार रहे हैं तो कोई कारण ही नहीं है कि मेरे साथ उचित व्यवहार न हो। कारण के बिना तो कार्य सम्भव ही नहीं होता है। फिर भी अगर कोई अन्यायपूर्वक दुष्टता करे तो स्मरण रखें कि

मेरी हर परिस्थिति में परमात्मा तो न्यायकारी सदैव है,
मेरी हर परिस्थिति में परमात्मा तो सर्वशक्तिमान् सदैव है।
मेरी हर परिस्थिति में परमात्मा तो रक्षक सदैव है।।

जो सुरक्षा, जो निर्भयता परमात्मा से मिलती है वह हमेशा के लिए होती है, प्रचुर मात्रा में होती है। लोक में व्यक्ति, वस्तुएँ कुछ समय के लिए सहायक हो सकते हैं, पर परमात्मा प्रदत्त सुरक्षा तो जीवन पर्यन्त व अनन्त काल तक रहती है। इस बात को जितनी गम्भीरता से, गहराई से, सूक्ष्मता से समझ लिया जाए, उतनी ही अधिक सुरक्षा, शान्ति व निर्भयता जीवन में आती जाती है।

हम यही चाहते हैं न कि कुछ परिस्थितियाँ विशेष हमेशा बनी रहें, कुछ व्यक्ति विशेष हमेशा हमारे साथ रहें।

कहीं न कहीं यह भावना भी मन में रहती है, कोई हर परिस्थिति में, हर स्थान पर, मेरे साथ रहे, मुझे सहयोग दे, मेरी बात सुने, मुझे ज्यों का त्यों समझे, मुझे समझाए, मुझे मार्ग दर्शन दे, भटक जाऊँ तो खींच कर वापिस लाए.... इन विचारों को प्रकट होने दें, दबाएँ नहीं, ये भाव हैं तो हैं, नकारे नहीं। अब इस प्रकार की भावनाओं को व्यक्तियों पर, घटाना शुरू करें, एक-एक करके, बचपन से लेकर आज तक कितने सम्बन्ध बने, टूटे, इस प्रक्रिया को विस्तार से पकड़े। अपने मानसिक धरातल पर विचारे कि क्या व्यक्ति हमेशा एक से रहे? परिस्थितियाँ एक सी रहीं? दूसरों को छोड़िए अपने शरीर पर आएँ, क्या ये हमेशा से एक सा रहा? कभी घटा कभी बढ़ा, कभी पुष्ट हुआ, कभी कमजोर हुआ? ये शरीर कहाँ तक साथ देगा? समझ में स्पष्ट नजर आएगा कि नहीं, सब कुछ कहीं न कहीं, कभी न कभी छूटने वाला है। सभी का साथ, सहयोग, सम्बन्ध छूटना ही है क्योंकि हर चीज एकदेशीय है। इनकी सीमाएँ, क्षमताएँ, इनका प्रेम सीमित है तो फिर क्या विकल्प है? -

ईश्वर- वह असीम है, अनन्त है, हर क्षण है, हर स्थान पर है, वह निर्बाध रूप से अपना सहयोग, स्नेह निरन्तर देता रहता है। उसी के साथ से हम निर्भय हो सकते हैं। जब भी भयभीत हों तो प्रार्थना करें-

अभयं मित्रा दभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।

-अथर्व. १९-१५-६

हे ईश्वर! हमें मित्र से अभय हो, शत्रु से अभय हो, जाने हुए पुरुष से अभय हो, अज्ञात पुरुष से अभय हो, रात्रि में अन्धकार में अभय हो और दिन में अभय हो। सब दिशाओं में रहने वाले व्यक्ति मेरे-हमारे दुःखहर्ता एवं सुखदाता, स्नेही बन जाएँ।

No fear from the friends,
Nor from the enemy,
No fear from the known,
Nor from the unknown,
No fear in the night,
Nor in the day.
May we be friends unto all direction and
May all directions be friendly unto us.

हमें भय तब लगता है जब हम न्यून होते हैं। अगर परीक्षा की तैयारी पूरी कर रखी है तो भय नहीं लगता है। जीवन भी तो एक परीक्षा ही है, हम अगर ठीक दिनचर्या से चल रहे हैं, उपयुक्त व्यवहार कर रहे हैं, अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह कर रहे हैं, तो भय के लिए कोई स्थान नहीं रहता है।

फिर भी अगर भय पैदा हो रहा है तो दो कारण हो सकते हैं। **प्रथम**- आत्म विश्वास की कमी। इसको बढ़ाने के लिए अपने सुनहरी अतीत के क्षणों को याद करें। उन कठिन परिस्थितियों को याद करें जब अपने साहस से सामना किया था। तब से अब में काफी अन्तर आया है। विचार करें कि मेरी सामर्थ्य, योग्यता बढ़ गई है, मैंने प्रगति की है, मेरी क्षमताएँ कल से आज बेहतर हुई हैं। ऐसे चिन्तन से अपना आत्म विश्वास बढ़ा लेवें।

दूसरा कारण है- ईश्वर में विश्वास की कमी। इसको बढ़ाने के लिए ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव पर चिन्तन करें। उसकी सर्वशक्तिमत्ता का दृश्यमान व अदृश्यमान जगत् से अन्दाजा लगाएँ। जिस किसी व्यक्ति को हम चाहते हैं, उसके चिन्तन से ,उसके अनुकरण से हमें अच्छा लगता है, बल मिलता है। ईश्वर अभय है। यह गुण ईश्वर का अपने में लाने के लिए उसी से प्रार्थना करें।

हे ईश्वर! जीवन की पगडण्डी पर सांझ ढ़लने तक मैं निर्भय होकर जिऊँ। मानसिक शान्ति के लिए निर्भयता प्राप्त करनी अत्यन्तावश्यक है। जितनी-जितनी निर्भयता आती जाएगी, उतनी-उतनी मानसिक शान्ति व सन्तोष जीवन में आता जाएगा। सो अपने मानसिक चिन्तन में, ध्यान की प्रक्रिया में निर्भयता को शामिल करें।

-ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

वेद गोष्ठी का परिणाम

गत २६ वर्षों से ऋषि मेले के अवसर पर परोपकारिणी सभा व अन्तरराष्ट्रीय वेद पीठ के तत्त्वावधान में ऋषि मेले के अवसर पर वेद गोष्ठी का आयोजन किया जाता है। जिसमें विद्वान् लोग अपने–अपने शोध पत्रों का वाचन करते हैं। इन शोध पत्रों का संग्रह भी सभा प्रकाशित करती है।

गत वर्ष की गोष्ठी में पढ़े गये निबन्धों में से तीन श्रेष्ठ निबन्धों को पुरस्कृत करने का निश्चय किया गया। गत ८,९,१० नवम्बर २०१३ के ऋषि मेले के अवसर पर सम्पन्न वेद गोष्ठी में विद्वानों ने अपने शोध पत्रों का वाचन किया। विद्वान् परीक्षकों ने इनका अध्ययन कर जिन तीन निबन्धों को श्रेष्ठ मानकर पुरस्कार के लिए संस्तुति की है, उनके नाम इस प्रकार है–

स्थान	**शीर्षक**	**लेखक**
प्रथम	चार्वाक दर्शन और वेद	डॉ. वेद प्रकाश, होशियारपुर
द्वितीय	ईश्वर–जैन और वैदिक दृष्टि	डॉ. वेदपाल, मेरठ
तृतीय	ईश्वर की सिद्धि में प्रत्यक्षादि प्रमाण सिद्ध नहीं है	डॉ. कृष्णपाल, जयपुर

पुरस्कृत विद्वानों को बधाई और सभी विद्वान् लेखकों को धन्यवाद।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन–जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए 'आस्था–भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग–यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था–भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था–भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद–प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के उपनिषद् प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था–भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था–भजन' (चैनल) डिश–टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा–स्काई, वीडियोकोन, बिग–टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार–बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक–धर्म के प्रचार–प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

जिज्ञासा समाधान - ६८

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा १- आचार्य सत्यजित् जी, सादर नमस्ते।

घर बनाते हैं तो गृह-प्रवेश संस्कार करते हैं। कुछ सामग्री होती है। चारों कोनो में चार ओम् के झण्डे गाड़ते हैं। एक थाली में शीशम के पत्ते, आम के पत्ते, फूल, गोबर, दही, मधु, घी, दूध आदि मिलाकर ध्वजों की जड़ में डालते हैं। जलसिंचन करते हैं। चारों कोनों में कुण्ड ले जाकर आहुतियाँ देते हैं। पति-पत्नी यह कार्य सम्पन्न करते हैं। इन सब चीजों के डालने का कारण क्या है? पण्डितों से पूछने पर वे मौन साध लेते हैं। आप उत्तर देकर जिज्ञासा का समाधान अवश्य कर सकते हैं। इसी प्रतीक्षा में। धन्यवाद।

- सोनालाल नेमधारी, कारोलिका, बेलप्रट, मोरिशस

समाधान- गृह प्रवेश विधि में ऋषि ने हवन और हवन से अतिरिक्त क्रिया विशेष करने का विधान किया है। हवन और क्रिया विशेष का विधि विधान 'संस्कार विधि' में महर्षि स्वामी दयानन्द ने दिया हुआ है। क्रिया विशेष के लिए कांस्यपात्र में उदुम्बर, गूलर, पलाश के पत्ते, शाडवल, तृणविशेष, गोमय, दही, मधु, घृत, कुशा और यव इन सब वस्तुओं को मिलाया जाता है। फिर इन मिले हुए पदार्थों को चारों दिशाओं के समीप बिखेरा जाता है।

आपका प्रश्न है उदुम्बर, गूलर आदि के पत्ते व अन्य वस्तुओं को डालने का क्या कारण है? इसका संक्षिप्त उत्तर है कि ये सभी वस्तुएँ हमारी समृद्धि, ऐश्वर्य्य, सम्पन्नता और स्वास्थ्य का कारण हैं। जब हम नये घर में निवास करने वाले हैं तो उस नये घर में सब प्रकार की सम्पन्नता रहे ये सब उसके प्रतीक हैं। कांस्यपात्र हमारी आर्थिक सम्पन्नता का प्रतीक है, दही, घृत, मधु आदि हमारी समृद्धि का प्रतीक है। गूलर, उदुम्बर, यव आदि औषधियाँ व वनस्पतियाँ हमें स्वस्थ रखने के लिए हैं, ये हमारे स्वास्थ्य का प्रतीक है और कुशा पवित्रता का प्रतीक है।

हमारे घर में आर्थिक सम्पन्नता बनी रहे, दूध, दही, घृत आदि से हमारा घर समृद्ध रहे, घर में रहने वाले सभी स्वस्थ रहें और सब प्रकार की पवित्रता हमारे घर में सदा बनी रहे इसलिए इस सामग्री विशेष को घर के चारों द्वारों पर बिखेरा जाता है।

जिज्ञासा २- परम आदरणीय आचार्य सोमदेव जी।

परोपकारी, नवम्बर द्वितीय-२०१३ अंक में जिज्ञासा-समाधान संख्या-५१ में 'मुक्तात्मा परमात्मा के सान्निध्य में किस तरह सुखानुभूति करता है' इस पर आपका स्पष्टिकरण बहुत ही ज्ञानप्रद रहा। इसके लिये कोटिशः धन्यवाद। अब मेरी जिज्ञासा का भी कृपया समाधान करें।

आर्यसमाज, राजेन्द्रनगर, दिल्ली-६० के मंच से एक विद्वान् पुरोहित ने सृष्टि प्रारम्भ तिथि परम्परागत मान्यतानुसार चैत्र-शुक्ल प्रतिपदा बताया। किन्तु इस पर गणित ज्योतिष के जिक्र के अतिरिक्त कोई अन्य वैदिक या शास्त्रीय प्रमाण नहीं दिया और साथ ही वर्तमान नवरात्रि पर्व जो पौराणिकों द्वारा विशेष रूप से मनाया जाता है, उसे भी वैदिक परम्परा से जोड़ दिया। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में भी इस उक्त तिथि का जिक्र मुझे नहीं मिला। इस पर मेरी जिज्ञासा है-

(क) मनुष्योत्पत्ति से पूर्व विज्ञान कहता है कि प्रथम जड़ सृष्टि जैसे ब्रह्माण्ड के पिण्डों का निर्माण हुआ। फिर पृथ्वी इस लायक बनायी गयी जिस पर जीव-जन्तु और मनुष्य रह सके। इस सृष्टि निर्माण की प्रक्रिया क्रमशः उत्तरोत्तर काल में सम्पन्न हुई। इनमें से किसका कार्य प्रथम प्रारम्भ किया गया। क्या इसका प्रमाण होते ही प्रकृति के मूल-तत्त्व में प्रकम्पन्न से या फिर पृथ्वी या पशु-पक्षी या फिर मनुष्योत्पत्ति काल से इस तिथि को जोड़ा जाय। क्रमशः निर्माण प्रक्रिया का ज्ञान होता है। ज्योतिष के हिमाद्रि ग्रन्थ में लिखा है- चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि...। इससे भी यह स्पष्ट नहीं होता है कि किस जगत्, जड़ या चेतन जगत् की रचना उक्त तिथि पर प्रारम्भ हुआ। कृपया स्पष्ट करें।

(ख) वर्त्तमान में पौराणिक पद्धति (माता पार्वति के ९ रूपों की पूजा) अनुसार वर्ष में दो नवरात्रि मनाया जाता है, उसे क्या वैदिक पद्धति से जोड़ना उचित है। वैदिक-युग में इनका क्या महत्त्व था और उस समय इस पर्व को कैसे मनाया जाता था और अब कैसे मनाया जाय?

- डॉ. एल.पी. शास्त्री, ई-१५, एम.आई.जी. फ्लैट, प्रसाद नगर-।।, नई दिल्ली-५

समाधान- **(क)** सृष्टि प्रारम्भ का काल चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से माना जाता है। यह काल सृष्टि के सम्पूर्ण रूप से प्रकाश में आने के बाद अर्थात् मनुष्य उत्पत्ति के बाद माना जाना चाहिए, यही युक्ति से व प्रमाण से ज्ञात हो रहा

है। युक्ति तो यह है कि काल गणना मनुष्य से ही सम्भव है। मनुष्य जब उत्पन्न हुआ तब से काल गणना भी प्रारम्भ हुई। जैसे अब वर्त्तमान में वर्ष का आरम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से मानते हैं वैसे ही सृष्टि का प्रथम वर्ष भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से मानना चाहिए। इसमें हमें जो शास्त्र प्रमाण मिले हैं वे हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। (सृष्टि उत्पत्ति चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से)

१. लंकानगर्यामुदयाच्च भानोस्तस्यैव वारं प्रथमं बभूव।
मधोः सितोदेर्दिनमासवर्षयुगादिकानां युगपत्प्रवृत्तिः।।

सिद्धान्त शिरोमणि. मध्य. १५

अर्थात् लंका नगरी में सूर्य उदय होने पर उसी के वार अर्थात् आदित्यवार में चैत्र मास शुक्ल पक्ष के आरम्भ में दिन, मास, वर्ष, युग आदि आरम्भ हुए। इसी आशय को लेकर अन्य श्लोक भी हैं-

२. चैत्रासितादेरुदयाद् भानोर्दिनमासवर्षयुगकतयाः।
सृष्ट्यादौ लंकायां समं प्रवृत्ता दिनेऽर्कस्थ।।

ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त अ. १

३. मधुसितप्रतिपद्दिवासादितो रविदिने दिनमासयुगादयः।
दशसिरः पुरि सूर्यसमुद्गमत् सममभी भवसृष्टिमुखेऽभवन्।।

सिद्धान्त शेखर अ. १ श्लो. १०

४. चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्लपक्षे समग्रन्तु तदा सूर्योदये सति।।

हिमाद्रि ग्रन्थ

इसी आशय युक्त श्लोक विष्णुधर्मोत्तर पुराण-ब्रह्मसिद्धान्त में भी है।

५. लंकायामर्कोदये चैत्रशुक्लप्रतिपदारम्भेऽर्कदिनादा-
वश्विन्यादौ किंस्तुघ्नादौ रोद्रादौ कालवृत्तिः।।

इन श्लोकों में लंका नगरी का कथन आया है, इसका आशय हम भी नहीं समझ पाये किन्तु यह अवश्य स्पष्ट हो रहा है कि सृष्टि का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से हुआ है। यह मानवोत्पत्ति से लेना चाहिए, परम्परा से ऐसा ही चला आ रहा है।

(ख) नवरात्र का कोई वैदिक आधार दृष्टिगोचर नहीं हो रहा। यह प्रथा पुराणों के आधार पर चली आ रही है। पौराणिक पार्वती के ९ रूप मानते हैं, उसके आधार पर ९ दिन उपवास करते हैं। कुछ वैदिक विद्वान् भी अपनी कल्पना के आधार पर देवी के ९ रूपों की अलग-अलग व्याख्या करते हैं, इस व्याख्या का उनके पास कोई वैदिक आधार भी नहीं होता। उनके ऐसा करने से पौराणिक मान्यताएँ ही पुष्ट होती हैं, जो कि ठीक नहीं है। इसलिए इसको वैदिक पद्धति से जोड़ना उचित नहीं है।

वैदिक उपदेशकों द्वारा आजकल कुछ पौराणिक मान्यताओं को अपने ढंग से व्याख्या करने का फैशन सा आ गया है। ऐसा करते हुए वे भूल जाते हैं कि हम वैदिक मान्यता को छोड़ पौराणिक मान्यता को पुष्ट कर रहे हैं।

एक उपदेशक आर्यसमाज के मंच से गणेश को राजा का रूप देकर व्याख्या कर रहा था। उस व्याख्या में उसकी प्रायः सभी बातें तर्कहीन थी। उसके व्याख्यान के बाद मेरा क्रम था, मैंने बोलने से पहले कहा कि ये क्या कर दिया, आपकी बातें तर्कहीन हैं। जब इस रूप वाला कोई गणेश ही नहीं हुआ, हो ही नहीं सकता तो उसकी व्याख्या कैसी? मेरे द्वारा समझाने पर उस उपदेशक ने कहा- गुरु जी गलती हो गई, मेरे विषय में मंच से कुछ मत कहना। ऐसे लोग विचार संकरता को फैलाने वाले होते हैं।

रही पूर्वकाल में इसको मानने वाली बात, तो ये काल ऋतु संधिकाल होता है। ऋतु संधिकाल में प्रायः रोग उत्पन्न होते हैं। इन रोगों से बचने के लिए हो सकता कि लोग कुछ दिनों का उपवास करते रहें हों। उस उपवास काल में ईश्वर भक्ति विशेष करते हों। इस रूप में ये संधिकाल मनाये जाते रहे होंगे किन्तु आज उनका विकृत रूप हमारे सामने है।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

वेदगोष्ठी का आयोजन

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष पर २७वीं वेदगोष्ठी का आयोजन ऋषि मेले के साथ ही दीपावली के पश्चात् ३१ अक्टूबर तथा १, २ नवम्बर २०१४, शुक्र, शनि, रविवार को किया गया है। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विषय 'भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद' रखा गया है। इससे पूर्व वर्ष में कुछ विचार ग्यारहवें समुल्लास के सम्बन्ध में विचार किया गया था। इस वर्ष की गोष्ठी में ऋषि दयानन्द के पश्चात् प्रचलित मत सम्प्रदायों के सिद्धान्त और उद्देश्यों पर विशेष चर्चा होगी। किन विशेष सम्प्रदायों को विचार के लिए लिया जायेगा, इसकी सूचना आगे के अङ्क में दी जा सकेगी।

श्रेष्ठ निबन्ध के लिए प्रथम ६१००, द्वितीय ४१००, तृतीय पुरस्कार ३१०० रुपये रखे गये हैं। गत वर्ष के श्रेष्ठ निबन्धों को आगामी ऋषि मेले के अवसर पर पुरस्कृत किया जायेगा। **- संयोजक**

पुस्तक – परिचय

१. पुस्तक का नाम– तड़पवाले तड़पाती जिनकी कहानी

लेखक– प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

प्रकाशक– पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय प्रकाशन मन्दिर, अबोहर, पंजाब

पृष्ठ– २६३, **मूल्य**– २००/– रु. मात्र

१. किसी भी देश, समाज, संस्था का उज्ज्वल इतिहास उस देश, समाज, संस्था की धरोहर हुआ करता है। बुद्धिमान् पुरुष ऐसे इतिहास को संजोकर रखता है, उसको सुरक्षित रखता है, करता है। ताकि आगे आने वाली पीढ़ियाँ उस इतिहास से प्रेरित होती रहें, शिक्षा लेती रहें।

आर्यसमाज का इतिहास भी बड़ा ही प्रेरणादायी रहा है। इसमें हुए विद्वानों, संन्यासियों, उपदेशकों, कार्यकर्त्ताओं का जीवन बड़ा ही निराला रहा है। साधन न्यून होते हुए, परिस्थियाँ प्रतिकूल होते हुए भी वे वैदिक धर्म का प्रचार, विरोधियों के उत्तर, शास्त्रार्थादि करते रहे। आज जैसे साधन उनके पास नहीं थे, जैसी आज विद्वानों, उपदेशकों को सुविधायें प्राप्त होती हैं, वैसी उन पूर्व के लोगों के पास नहीं थी फिर भी वे वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार अधिक से अधिक करते थे। उनके द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार आज की अपेक्षा कहीं अधिक था। वह इसलिए क्योंकि वे लोग अपने स्वार्थ के लिए नहीं अपितु परमार्थ के लिए कार्य करते थे। उन लोगों में त्याग की भावना, परोपकार की भावना, मनुष्य जाति के उत्थान की भावना प्रबल रूप से काम करती थी।

जो मानव जाति अपने महापुरुषों के कार्यों, विशेषताओं को आदर्श बनाकर चलती है वह अपने सिद्धान्तों की, अपने संगठन की अपने आप की रक्षा कर लेती है, कर पाती है।

आर्यसमाज के इतिहास के विषय में वर्तमान में महामन पं. राजेन्द्र जिज्ञासु जी से अधिक कौन जानता होगा। इतिहास की घटनाओं को मिर्च-मसाला न लगाकर उनको जैसे का तैसा रखना यह इतिहासज्ञों की बड़ी विशेषता होती है, यह विशेषता प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी में है। जिज्ञासु जी ने अनेकों पुस्तकों की रचना की है, जिनमें 'तड़प वाले तड़पाती जिनकी कहानी' भी एक है। यह पुस्तक प्रथम बार १९८७ में छपी थी। अब इसका नया परिवर्धित संस्करण छपा है। इस पुस्तक में आर्यसमाज के विद्वान्, उपदेशक, कार्यकर्त्ता, संन्यासी आदियों के जीवन की घटनाओं का बड़े ही रोचक ढंग से वर्णन है। पुस्तक को १४ अध्यायों में विभक्त किया है।

१. वीरों की शान निराली २. वैदिक धर्म की जय हो ३. महापुरुषों की महिमा ४. तप से बहती निर्मल धारा ५. ऋषि मिशन का युग ६. श्रद्धा व सेवा का आर्यसमाज ७. प्रचार में दिन देखा न रात ८. बड़ों की बड़ी बात ९. जीवन बदलते प्रेरक प्रसंग १०. वेद-धर्म के रक्षक दिवाने ११. आर्यों की शौर्य गाथा १२. आर्यों के बलिदान व संघर्ष १३. नव निर्माण की राहों में १४. विविध संस्मरण।

१०वें अध्याय में एक घटना दी 'आर्यसमाजी बन गया तो ठीक किया'– १९०३ ई. में गुजराँवाला में एक चतुर मुसलमान शुद्ध होकर धर्मपाल बना। इसने गिरगिट की तरह कई रंग बदले। इस शुद्धि समारोह में कॉलेज के कई छात्र सम्मिलित हुए। ऐसे एक युवक को उसके पिता ने कहा– 'हरिद्वार जाकर प्रायश्चित करो, नहीं तो हम पढ़ाई का व्यय नहीं देंगे।' प्रसिद्ध आर्य मास्टर लाला गंगाराम जी को इसका पता लगा। आपने उस युवक को बुलाकर कहा– तुम पढ़ते रहो, मैं सारा खर्चा दूँगा। इस प्रकार कई मास व्यतीत हो गये तो लड़के के पिता वजीराबाद में लाला गंगाराम जी से मिले और कहा 'आप हमारे लड़के को कहें कि वह घर चले, वह आर्यसमाजी बन गया तो अच्छा ही किया। हमें पता लग गया कि आर्यसमाजी अच्छे होते हैं।' ऐसा था आर्यों का आचरण।

लगभग २२० घटनाओं से युक्त यह पुस्तक आर्य पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक, उत्साहवर्धक सिद्ध होगी। सुन्दर छपाई व आकर्षक आवरण से युक्त यह प्रत्येक आर्य पाठक के लिए पढ़ने योग्य है। जो आर्य अपने तड़प वाले आर्यों को समझना चाहे तो वह इस पुस्तक को अवश्य पढ़े।

२. पुस्तक – हुतात्मा भगतसिंह का दिव्य जीवन-दर्शन

लेखक – श्री धर्मेन्द्र जिज्ञासु

मूल्य– १००/– रु. मात्र, डाक सहित १३०/– रु.

पृष्ठ – २३७

अंग्रेजों से भारत को स्वतन्त्र कराने में हमारे क्रान्तिवीरों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इन लोगों ने अपना सब कुछ देश के ऊपर न्यौछावर कर दिया। अपनी जवानी,

अपना समस्त सामर्थ्य देश पर वार दिया। यदि ये क्रान्तिवीर चाहते कि वे भी संसार के विषय भोगते हुए सामान्य जीवन व्यतीत करें तो वे कर सकते थे। किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया, उन्होंने देश को प्रमुख माना व्यक्तिगत सुख उनके लिए तुच्छ हो गये। भारतीयता, भारतीय संस्कृति, भारतीय अस्मिता के लिए ही उनका जीना-मरना था। एक ही लक्ष्य को सामने रखकर जी रहे थे कि अंग्रेजों से भारत को मुक्त कराना है।

इन क्रान्तिकारियों में चन्द्रशेखर आजाद, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, भगवतीचरण बोहरा, भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव, खुदीराम बोस, ठाकुर रोशन सिंह, वीर सावरकर, ऊधमसिंह, मदनलाल धींगरा आदि अनेक परीचितों-अपरीचितों के नाम हैं। ये सभी अपनी-अपनी प्रतिभा विशेष से सम्पन्न थे। सभी हमारे लिए आदरणीय हैं।

इन सब में भगतसिंह कुछ अलग सूझ-बूझ और प्रतिभा से युक्त रहे हैं, उनकी देश के प्रति सोच, देश की भाषा के प्रति विचार, देशवासियों को जगाने की सूझ सभी कुछ ही निराला था। २०-२५ वर्ष की अवस्था में ये सब होना कोई छोटी बात नहीं है। महापुरुष सबके होते हैं। उनके ऊपर किसी व्यक्ति विशेष या समुदाय विशेष का अधिकार नहीं होता। हाँ, कुछ उनकी उदात्त विचारधारा को न समझने के कारण अपने संकुचित विचार को उन पर आरोपित कर उनको अपना कहना, प्रारम्भ कर देते हैं। भगतसिंह के जाने के बाद कुछ लोगों ने ऐसा ही किया। यथार्थ में भगतसिंह क्या थे, किन विचारों को मानते थे, क्या वे नास्तिक थे, आर्यसमाज से भगतसिंह का कितना गहरा सम्बन्ध था आदि बातें जानने के लिए युवा विचारक श्री धर्मेन्द्र जिज्ञासु द्वारा भगतसिंह पर लिखी गई शोध पूर्ण पुस्तक 'हुतात्मा भगतसिंह का दिव्य जीवन दर्शन' पढ़े। इस पुस्तक को लेखक ने तीन भागों में बाँटा है। प्रथम भाग में भगतसिंह से पूर्व इस देश की स्थिति परिस्थितियों का वर्णन किया हे और उन परिस्थितियों का भगतसिंह पर क्या प्रभाव पड़ा, किस प्रकार आर्यसमाज से जुड़े, आदि-आदि बातों को लेकर, भगतसिंह का विस्तार से वर्णन किया गया है।

दूसरे भाग में भगतसिंह की नास्तिकता के विषय में वर्णन है। इस पुस्तक को पढ़ने से पाठाकों को ज्ञात होगा कि क्या भगतसिंह यथार्थ में नास्तिक थे और नास्तिक थे तो किस प्रकार के नास्तिक थे।

भाग तीन में अनेकों लेखकों के लगभग छोटे-बड़े ४० लेख भगतसिंह विषयक हैं। प्रत्येक लेख रोचकता और नई जानकारी से भरा हुआ है। इस पुस्तक में लेखक ने साहित्यकार यशपाल की पुस्तक सिंहावलोकन से भगतसिंह सम्बन्धी अनेकों रोचक संस्मरण दिये हैं। जैसे- ''एक दिन मैं और भगतसिंह रावी नदी में नौका खेने का अभ्यास करने गए थे। मैंने भगतसिंह से कहा- हम लोग अपना जीवन देश के लिए अर्पण करने की प्रतिज्ञा कर लें। भगतसिंह ने गम्भीर होकर अपना हाथ मेरी ओर बढ़ाकर कहा- मैं प्रतिज्ञा करता हूँ । हाथ मिलाने के बाद हम दोनों कुछ देर तक चप्पू चलाना छोड़ निश्चल बैठे रहे। सूर्यास्त हुआ ही था, लौटते समय भी हम लोग चुप ही रहे बोले नहीं।''सिंहावलोकन'' भाग-०१ पृष्ठ- ८९।''''भगतसिंह ने २२ जुलाई १९१८ को दादा जी को पत्र में बताया था कि संस्कृत में १५० में से ११० अंक तथा अंग्रेजी में १५० अंक में से ६८ अंक लेकर पास हो गया हूँ। स्पष्ट है कि भगतसिंह को संस्कृत में जितनी रुचि थी, अंग्रेजी में उतनी ही अरुची थी। क्या यह मात्र संयोग था अथवा बचपन से ही जो घृणा अंग्रेजों के प्रति उसके मन में पनपती आ रही थी उसका परिणाम'' (इसी पुस्तक से उद्धृत)।

इस पुस्तक में लेखक ने भगतसिंह के सम्पूर्ण जीवन को दिखाने का प्रयास किया है। इस पुस्तक की अनेकों विशेषताएँ हैं। जैसे :- (१) भगतसिंह की महर्षि दयानन्द, सत्यार्थप्रकाश, आर्यसमाज पर क्या टिप्पणियाँ रहीं (२) भगतसिंह के सम्पर्क में रहे ३२ से अधिक आर्यसमाजियों के चित्र एवं संस्करण पाठकों को मिलेंगे (३) आर्य समाज वच्छोबाली लाहौर, आर्यसमाज कानपुर, आगरा, नया बांस, खारी बावली, चावड़ी बाजार, नई दिल्ली, कोलकाता आदि आर्य समाजों से भगतसिंह का सम्बन्ध (४)आर्य समाज के अनेकों गुरुकुलों से सम्बन्ध (५) डी.ए.वी. स्कूल, कॉलेज, नेशनल कॉलेज लाहौर व डी.ए.वी. कॉलेज कानपुर से भगतसिंह का सम्बन्ध (६) भगतसिंह की नास्तिकता पर प्रश्न लगाते हुए अनेकों लेखों के २४ प्रमाण (७) भगतसिंह के सम्बन्ध में ३५ से अधिक भ्रान्तियों का सप्रमाण समाधान आदि विषय पाठकों को पढ़ने को मिलेंगे।

सुन्दर आवरण, छपाई से युक्त यह पुस्तक पाठकों को भगतसिंह सम्बन्धी अनेकों नई जानकारियाँ देने वाली सिद्ध होगी।

- सोमदेव, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

३. पुस्तक का नाम- अन्तश्चरणी

रचनाकार देवातिथि- देवनारायण भारद्वाज

प्रकाशक– वैदिक सेवाश्रम ट्रस्ट, शिक्षक नगर, सासनी हाथरस–२०४२१६

पृष्ठ– ११२/–

वेदों के विद्वानों ने वेद मन्त्रों की व्याख्याएँ की है। वेद मन्त्रों के भावों को समझना आवश्यक है। वेद ध्वनि को प्राचीन काल से हमारा समाज सुनता–समझता आ रहा है। मर्मज्ञ विद्वानों ने भाव रूप, भाषा अर्थ की प्रधानता को स्पष्ट किया है। वेद मन्त्रों को आज के मानव मात्र के कल्याणार्थ काव्यमय रखने का सुअवसर विद्वान् रचनाकार देवनारायण भारद्वाज को मिला। आपने चारों वेदों में से चयनित कर कुछ मन्त्रों को अपनी काव्य की शैली बनाई है। मन्त्र के भाव को समझकर शब्दों में आज के परिप्रेक्ष्य में रचनाकार ने अपनी लेखनी चलाई है। भारद्वाज जी की काव्य शैली वेदमन्त्रों के अनुकूल भावाभिव्यक्ति के साथ है। भाव–भाषा अनुकूल है। अन्तश्चरणी में श्रुति गीत बल्लरी रचना हितोपदेशक के अङ्क में काव्य रचना भण्डार में सम्मिलित हो रही है। वेद मन्त्रों को गायन रूप में प्रस्तुत किया है। पाठक वेद ज्ञान का रसास्वादन कर पायेंगे। सन्त स्नेह सिंचन में नाम के एक–एक वर्ण को दोहा छन्द में रचना की है। वेद का भाव गायन अनुपम बन पाया है। पाठक स्वअध्ययन से वेद मन्त्र के भावों को काव्यमय भाषा से सहज रूप से समझ पायेंगे। विचारों को प्रवाह मिलेगा। भारद्वाज जी का साधुवाद जो काव्य सामग्री सरस रूप में प्रस्तुत की है।

– देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

–महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचना चाहिये।

–महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम–**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक खाता संख्या–**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम–**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने,
जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक खाता संख्या–**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

संस्था - समाचार

१ से १५ जुलाई २०१४

१. यज्ञ एवं प्रवचन- परमपिता परमेश्वर की कृपा से, सभा कार्यकर्त्ताओं के पुरुषार्थ से व आप सभी के सहयोग से पिछले दिनों भी सभा की सभी गतिविधियाँ यथा- प्रातः सायं यज्ञ, प्रवचन, वृष्टियज्ञ, गुरुकुल, अतिथियों-आश्रमवासियों के लिए भोजनशाला, गौशाला, चिकित्सालय, परोपकारी व अन्य ग्रन्थों का प्रकाशन, जनसम्पर्क व प्रचार अभियान आदि यथावत् चलती रही।

जैसा कि विदित है अपनी इन्हीं गतिविधियों के कारण सभा को समय-समय पर विभिन्न विद्वानों का सान्निध्य प्राप्त होता रहता है। इसी क्रम में विगत दिनों आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान्, इतिहासकार प्रा. राजेन्द्र जी जिज्ञासु पधारें (समादरणीय इतिहासकार सत्येन्द्र सिंह जी विगत एक माह से ऋषि उद्यान में ही रहकर हमें मार्गदर्शन दे रहे हैं।) आप १ से ७ जुलाई २०१४ तक ऋषि उद्यान में रहें। इस दौरान आपसे अधिक से अधिक लाभ उठाने की दृष्टि से प्रातः सायं दोनों समय आपके प्रवचन होते रहें। इस दौरान आपसे महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पण्डित लेखराम, पण्डित रामचन्द्र देहलवी, स्वामी दर्शनानन्द, पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय, स्वामी रामेश्वरानन्द, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, स्वामी रुद्रानन्द, स्वामी विज्ञानानन्द, स्वामी सत्यप्रकाश, आचार्य उदयवीर शास्त्री, स्वामी सर्वानन्द, जगन्नाथ दत्त आदि से सम्बन्धित रोचक व प्रेरणादायी संस्मरणों का लाभ समस्त आश्रमवासी व आगन्तुक महानुभावों ने उठाया।

'पावकाः नः सरस्वती' मन्त्रांश की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि यहाँ अग्नि स्वरूप परमात्मा से प्रार्थना की जा रही है कि मैं आपकी तरह बन जाऊँ। हमारे यहाँ शास्त्रों में अग्नि, वायु और जल की पर्याप्त चर्चा है। इन तीनों में जहाँ जीवनदायिनी शक्ति है वहाँ इनकी भयंकर शक्तियाँ पलभर में प्रलय भी ला देती हैं। अतः इनकी महत्ता स्वीकार करते हुए, आज की सरकारें भी इनके उपयोग/प्रयोग हेतु अरबों-खरबों रुपयों का बजट रखती है। इन तीनों में 'अग्नि' की प्रधानता प्रतीत होती है। वेदों में भी 'अग्नि' शब्द सर्वाधिक बार प्रयुक्त हुआ है। अग्नि में जहाँ जीवनदायिनी शक्ति होती है (हमारा शरीर व सपूर्ण ब्रह्माण्ड अग्नि से चलता है) वहीं इसमें कृमिनाशन, अशुद्धिनाशन आदि की शक्ति होती है। (माताएँ आचार आदि खाद्य पदार्थों के संग्रहण पात्र को अग्नि के माध्यम से कृमिरहित करती हैं। सोने को अग्नि में तपाने पर ही उसकी अशुद्धि नष्ट हो जाती है और वह कुन्दन बन जाता है।) लेकिन अग्नि की जो सबसे विलक्षण बात है वह यह कि अग्नि अपने सम्पर्क में आने वाले पदार्थों को भी अपने जैसा बना लेता है। लोहे के किसी टुकड़े को जब आग में डालकर तपाया जाता है तो थोड़े समय में ही वह अग्नि समान बन जाता है। वस्तुतः परमात्मा अपने भक्तों को अपने जैसा (जीवात्मा के सामर्थ्यानुसार ज्ञान व आनन्द से युक्त) बना लेता है। इसलिए इन गुणों का लौकिक अग्नि में साम्य होने के कारण ही उसे अग्नि कहा जाता है।

जैसे अग्नि अपने सम्पर्क में आने वाले पदार्थ को अपने जैसा बना लेती है, उसी तरह हम आर्य भी अपने सम्पर्क में आने वालों को अपने जैसा बना ले, उसे अपने आचार-विचार में रंग दे। महर्षि दयानन्द का उदाहरण हमारे सामने है। महर्षि का जीवन ऐसा था कि गुरुदत्त जैसा नास्तिक भी आस्तिक बन गया, अमीचन्द जैसे कीचड़ में पड़े कितने हीरे शुद्ध हो गए। महर्षि ने जहाँ ग्रन्थों के रूप में वेदभाष्य किया वहीं अपने आचरण से भी वेदभाष्य किया। विरोधी भी महर्षि के चरित्र का लोहा मानते थे। आज तरह-तरह के धर्मगुरु सामने आते हैं पुनः उनके विभिन्न चारित्रिक कुकृत्य सामने आते हैं लेकिन धन्य है तुझे महर्षि कि इतना चारित्रिक संयम होने पर भी तूने कभी मर्यादा को नहीं लांघा। महर्षि ने किसी महिला के साथ अकेले में तो क्या, सामूहिक चित्र भी नहीं खिंचवाया।

इसी क्रम में आपने पूर्व प्रधानमन्त्री चौधरी चरणसिंह के जीवन की प्रेरणादायी घटना सुनाई। चौधरी साहब अपने समय के माने हुए राजनेता, वकील और साथ ही साथ प्रसिद्ध आर्यसमाजी भी थे। एक बार आपके गाँव में एक व्यक्ति ने किसी महिला को छेड़ दिया। (ये छेड़ना आज की तरह का शारीरिक न होकर केवल वाचनिक था) महिला ने अपने घर के लोगों को बताया, दोनों पक्षों में विवाद हुआ- केस दर्ज हुआ। पहले पक्ष ने (आरोपी पक्ष ने) शहर जाकर अपनी सच्चाई छिपाते हुए चौधरी साहब से अपना केस लड़ने को कहा। चौधरी साहब ने अपनी स्वीकृति दे दी। जब यह बात पीड़ित पक्ष को पता चली तो वे भी चौधरी चरणसिंह के यहाँ पहुँच गये और चौधरी

साहब को ताने देने लगे कि 'आप भी खूब आर्यसमाजी बनते हो- उस गलत आदमी का केस लड़ने लगे। चौधरी साहब ने तुरन्त पूर्व पक्ष को बुलाया, आमने-सामने बात करायी तो पता चला कि वास्तव में पहला पक्ष गलत था। तुरन्त उनकी फीस वापस कराकर वह फटकार लगाई कि दूसरे पक्ष वाले इनके मुरीद बन गए। जहाँ भी जाते यही कहते कि आर्यसमाजियों का चरित्र ऐसा होता है।

स्वामी सर्वानन्द जी के आर्यसमाजी बनने के प्रसंग के बारे में आपने बताया कि स्वामी जी के आर्यसमाजी बनने के पीछे आर्यों का आचरण ही था। बात भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन की है जब अधिकांश स्वतन्त्रता-सेनानियों को किसी न किसी कारण से जेल में ठूस दिया जाता था और इनमें अधिकांश आर्यसमाजी हुआ करते थे। सामान्य कैदी जहाँ इस समय में कोई विशेष लाभ नहीं उठा पाते थे वहीं आर्यसमाजी जेल में अपनी सेहत बना लेते थे। वैदिक धुन के धनी आर्य लोग जब जेल से बाहर रहते तो सामाजिक कार्यों में इतने व्यस्त रहते कि दिनचर्या आदि चाहकर भी नियमित नहीं कर पाते थे लेकिन जेल में नियमित व्यायाम, सन्ध्या, स्वाध्याय, सिद्धान्त चर्चा आदि करके जब बाहर आते तो पर्याप्त शारीरिक, बौद्धिक उन्नति कर लेते थे। ऐसे में कोई कैसे इनसे अप्रभावित रह सकता है?

'विष्णोः कर्माणि पश्यत'- महर्षि ने अकेले आर्यसमाज के द्वितीय नियम में ही ईश्वर के २० नामों की चर्चा कर दी। कोई मुसलमानों और ईसाइयों के बड़े से बड़े ग्रन्थों में भी ईश्वर के २० नामों को ढूंढकर दिखाए? और आश्चर्य तब होता है जब ईश्वर के सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् आदि स्वरूप की व्याख्या करने वाले 'आर्य समाज' को कुछ स्वार्थी लोग सार्वजनिक रूप से नास्तिक कहते हैं। अरे स्वार्थियो! आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरीखा ईश्वर विश्वास क्या तुम अपने नेताओं में दिखा सकते हो?

स्वामी सत्यप्रकाश जी चूँकि अपने समय के प्रतिष्ठित वैज्ञानिक थे और उस समय वैज्ञानिकों में नास्तिक बनने का फैशन चल पड़ा था लेकिन स्वामी जी जहाँ भी जाते वहाँ विज्ञान के माध्यम से ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करते थे और विशेष बात यह थी कि स्वामी जी हर बार नए-नए तर्कों से ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करते थे। एक बार अपने प्रवचन में स्वामी जी ने श्रोताओं से प्रश्न किया कि किसी भी वस्तु की स्वभाविक स्थिति क्या होगी- स्थिरावस्था या गतिशील अवस्था? तो इसका उत्तर दिया गया- स्थिरावस्था, स्थिरावस्था ही किसी भी वस्तु की स्वभाविक स्थिति है। लेकिन आज ब्रह्माण्ड में हर जगह गति दिखाई देती है- सूक्ष्मतम इलेक्ट्रॉन में भी और विशालकाय ग्रहों, सौर परिवारों, आकाशगंगाओं में भी। तो प्रश्न उत्पन्न होगा कि इन कणों/पिण्डों में गति कहाँ से आयी? क्योंकि सर्वमान्य न्यूटन के गति के प्रथम नियमानुसार ''यदि कोई वस्तु विरामावस्था में है, तो वह विराम अवस्था में ही रहेगी जब कि उस पर कोई बाह्य बल लगाकर उसकी वर्तमान अवस्था में परिवर्तन न किया जाए'' वह स्थिर ही रहेगी । इन पिन्डों में गति देने वाले को ही हमारे शास्त्रों में ईश्वर कहा है।

मनुष्य अल्पज्ञ है अतः जब किसी चीज को बनाता है तो उसमें त्रुटि रह जाती है, कालान्तर में ज्ञान में वृद्धि होने पर वह उसके उन-उन दोषों को दूर करने का प्रयास करता है इसके विपरीत परमात्मा सर्वज्ञ है, तो उसकी रचना में इस तरह का दोष नहीं होता, वह अपने स्वरूप में उपयुक्त होती है, बल्कि जब उसमें पवितर्न किया जाता है तो वह बेढंग लगती है। जैसे अगर मनुष्य के चेहरे में नेत्र, कान, नाक, आदि का स्थान बदल जाता है तो वह जन सामान्य के उत्सुकता का विषय बन जाता है। इसी प्रसंग में समादरणीय ओमप्रकाश वर्मा जी के जीवन का एक प्रसंग सुनाते हुए आपने बताया कि एक बार जब वर्मा जी आर्यसमाज हैदराबाद के उत्सव में पधारे थे तो सभी आगन्तुकों के भोजन का प्रबन्ध आर्यसमाज के मन्त्री के यहाँ किया गया था। मन्त्री जी की माता जी पौराणिक मान्यताओं वाली थी, लेकिन विद्वानों को बड़े ही प्रेम-आदर से भोजन कराती थी। जिस कमरे में विद्वानों को भोजन कराया जाता था वहाँ दुर्गा माता आदि पौराणिक देवी-देवताओं के कई सारे चित्र लगे थे। वर्मा जी ने मन्त्री जी से पूछा तो मन्त्री जी बोले माता जी इन सबकी पूजा करती है। भोजन के बाद माता जी ने जब वर्मा जी से कुछ उपदेश-आर्शीवाद देने को कहा तो वर्मा जी बोले- माता जी। आपके यहाँ दुर्गा माता की तरह आठ-आठ हाथों वाली पोती का जन्म हो। माताजी बोली अरे-अरे पण्डित जी ये क्या आर्शीवाद दे रहे हो, उस कन्या का हम क्या करेंगे, उसकी शादी कैसे होगी? लेकिन थोड़ी देर बाद माता जी को वर्मा जी की बात समझ में आ गई।

एक बार स्वामी रामेश्वरानन्द जी किसी गुरुकुल में थे। वहाँ गाय ने बछड़े को जन्म दिया। स्वामी जी ने चिल्ला

–चिल्लाकर कहने लगे कि देखों हमारी गाय ने पूरा का पूरा बछड़ा एक ही बार में दिया है– पूरा का पूरा बछड़ा एक ही बार में दिया है। देखों इसके तो सारे के सारे अंग आपस में जुड़े हैं, पूंछ भी सही जगह है, पैर–नाक–आँख–कान सब सही जगह पर है। गुरुकुल के लोग स्वामी जी की बात समझ ही नहीं पा रहे थे, तो स्वामी जी ने कहा– अरे हमारी सारी की सारी रचना टुकडों में होती है। हम टुकडों में ही बना सकते हैं, बनाते है। जब किसी फैक्ट्री में कोई वाहन बनाया जाता है तो उसके पहिये कहीं बनाए जाते हैं, इंजन कहीं और बनाया जाता है, लाइट कहीं और बनायी जाती है, लेकिन वह परमात्मा एक ही स्थान पर निर्माण कर देता है।

स्वामी रामेश्वरानन्द जी यह भी कहा करते थे कि मनुष्य केवल प्रकाश में कोई निर्माण कर सकता है लेकिन परमात्मा अन्धेरे में ही निर्माण करता है। इसी प्रसंग में जिज्ञासु जी ने यूरोप के एक प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक की रोचक घटना सुनाई। इस चिकित्सक का बड़ा नाम था, लोग दूर–दूर से एशिया व अमेरिका के देशों से इसके पास इलाज कराने आते थे और ये चिकित्सा भी अच्छी करता था, लेकिन वह था नास्तिक और उसका नियम था जो भी इलाज कराने आता पहले उसको नास्तिकता पर लम्बा भाषण देता फिर उसका इलाज करता था। एक दिन जब वह किसी मरीज का ऑपरेशन कर रहा था तो अचानक बिजली चली गई। चिकित्सालय में बिजली जाती नहीं थी, अचानक चली गई, वहाँ इनवर्टर–जेनरेटर आदि की कोई व्यवस्था नहीं थी, ऑपरेशन टेबल में अंधेरा छा गया, डॉक्टर सोचने लगा कि मैं जिस बनी बनाई आँख को भी अन्धेरे में ठीक नहीं कर सकता तो ये पूरी की पूरी आँख अन्धेरे में किसने बनायी? इसको बनाने वाली कोई शक्ति जरूर है। ऐसा चिन्तन करते–करते वह आस्तिक हो गया।

झूठे की जबान कैसे हिलती है?– परमात्मा ने जीवों को कर्म करने की स्वतन्त्रता प्रदान की है, जिसमें वह किसी प्रकार हस्तक्षेप नहीं करता, हाँ उसके अच्छे–बुरे कर्मों का नियमानुसार फल अवश्य प्रदान करता है। इन सिद्धान्तों की स्पष्ट व्याख्या वैदिक त्रेतवाद में है।

कुछ मत–पन्थ–सम्प्रदाय के लोग– 'परमात्मा की इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता' कहकर अपरोक्ष रूप से संसाार में जो कुछ हो रहा है उसके परमेश्वर को ही दोषी ठहराते हैं। इसी प्रसंग में पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय का एक रोचक प्रसंग सुनाते हुए आपने बताया कि एक बार पण्डित जी रेल से कहीं जा रहे थे। साथ वाली सीट पर कोई मुस्लिम परिवार यात्रा कर रहा था। उनमें से एक मुस्लिम सज्जन बोले– देखिए हमारे ग्रन्थ में कितनी बड़ी बात कही गई है कि उस अल्लाह की मर्जी के बिना पत्ता भी नहीं हिलता। इस पर पण्डित जी बोले कि मियाँ पत्ते का तो पता नहीं लेकिन झूठे की जबान जरूर अल्लाह की मर्जी के बिना हिलती है (अर्थात् झूठा व्यक्ति ईश्वर की इच्छा के बिना ही झूठ बोलता है)। इस युक्ति से वे मुस्लिम सज्जन ऐसे निरुत्तर हुए कि कोई उत्तर देते न बने। अब मियाँ क्या बोले– यदि बोले कि नहीं झूठे की जबान भी अल्लाह की मर्जी से हिलती है तो फिर अल्लाह झूठ बुलवाने वाला, पाप कर्म कराने वाला हुआ और यदि कहें कि हाँ आपकी बात ठीक है तो अपनी बात कट जाए।

अपने प्रवचन क्रम में डॉ. धर्मवीर जी ने बताया कि मनुष्य की सोच होती है कि कर्मों का फल देते समय ईश्वर उसके प्रति अनुग्रह का व्यवहार करें, यही नहीं वह चाहता है कि दूसरे का हिस्सा भी उसे दे दिया जाए। यह व्यवहार एक मनुष्य तो कर सकता है लेकिन ईश्वर नहीं, क्योंकि मनुष्य का एक दायरा होता है जिसमें उसके परिवार, समाज के लोग होते है, उस दायरे के बाहर के जो लोग होते हैं उनके प्रति प्राय: वह उपेक्षा का भाव रखता है, उनके सुख–दु:ख से उसका सरोकार नहीं होता। लेकिन ईश्वर का दायरा तो अपने में समस्त जीवों को समेटे हुए है इसलिए वेद कहता है कि वह परमात्मा ही हम सबका माता–पिता, बन्धु, सखा, गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है। सारे ही उसके अपने हैं, तो वह किसके साथ अपने का व्यवहार करें और किसके साथ पराये का? ऐसे व्यवहार की अपेक्षा करता हुआ मनुष्य दोहरा मापदण्ड अपनाता है। जब लोक में एक व्यापारी सही नाप से, एक भाव से समान बेचता है (अर्थात् ऐसा व्यापारी जिसके पास कोई बच्चा भी जाता है तो वह नाप और भाव में कोई गडबड़ी नहीं करता) तो उसे सब अच्छा मानते हैं और दूसरा व्यापारी जो गलत नाप–भाव से समान बेचता है (किसी को कुछ भाव से, किसी को कुछ भाव से) तो उसको कोई अच्छा नहीं मानता, कोई पसन्द नहीं करता। लेकिन आश्चर्य तब होता है जब ईश्वर की बात आती है तो अधिकांश चाहते हैं कि ईश्वर दूसरे व्यापारी की तरह व्यवहार करें, ये हमारा दोहरा मापदण्ड है। इस प्रकार आश्रमवासियों व आगन्तुक महानुभावों को प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु व डॉ. धर्मवीर जी के साथ–साथ समादरणीय सत्येन्द्र जी व आचार्य सोमदेव जी के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। इति।।

आर्यजगत् के समाचार

१. चतुर्वेद-शतकम्-यज्ञ- श्री नरेन्द्र मोदी जी व भाजपा की १६वीं लोकसभा चुनावों में हुई ऐतिहासिक जीत के उपलक्ष्य में ऋषि उद्यान, अजमेर में १ जून २०१३ को डॉ. सत्येन्द्र सिंह (मेरठ) के ब्रह्मत्व में चतुर्वेद-शतकम्-यज्ञ किया गया। कार्यक्रम का संयोजन श्री विजय गहलोत एवं बालेश्वर मुनि द्वारा किया गया। साथ ही साथ समस्त आर्थिक प्रबन्धन भी आप दोनों ने ही किया।

वस्तुत: यह तो एक मौका था अपने पुरुषार्थ की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करने का। श्री मोदी जी की जीत वास्तव में गहलोत जी जैसे उन लाखों-करोड़ों गुमनाम कार्यकर्त्ताओं के पुरुषार्थ का परिणाम थी, जिन्होंने इसे परिणति तक पहुँचाया। श्री गहलोत जी चुनाव प्रचार के दिनों में परोपकारी के सम्पादक डॉ. धर्मवीर जी के एतत्विषयक सम्पादकियों को अपने खर्चे पर, पर्चे के रूप में छपवाकर, हजारों की संख्या में बाँटते रहे और अपने परिचित-अपरिचित लोगों को राष्ट्रहित में मतदान करने के लिए प्रेरित करते रहें, वस्तुत: साधुवाद के पात्र है।

२. शिविर का आयोजन- आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू में महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में १४ से २१ सितम्बर २०१४ तक नि:शुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया जायेगा। जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए जाऐंगे तथा दर्शन-पठनपाठन की भी व्यवस्था है। साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। इस अवसर पर सामवेद-पारायण यज्ञ भी होगा। सम्पर्क-०९४१९१९८४५१

३. पुरस्कार हेतु प्रविष्टियाँ- आर्यसमाज सान्ताक्रुज़ वर्ष-२०१४-१५ के लिए निम्नलिखित वेद-वेदांग पुरस्कार, वेदोपदेशक पुरस्कार, श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार, श्रीमती लीलावती महाशय 'आर्य महिला पुरस्कार' आदि १५ पुरस्कारों के लिए प्रविष्टियाँ आमन्त्रित की जाती है। अधिक जानकारी के लिए आर्यसमाज सान्ताक्रुज़, विठ्ठलभाई पटेल मार्ग, सान्ताक्रुज (पं.) मुम्बई-४०००५४ से सम्पर्क करें।

४. शिविर सम्पन्न- गुजरात की आर्यसमाजों के सदस्यों में आध्यात्मिक, सैद्धान्तिक व सांगठनिक चेतना के उद्देश्य से पिछले वर्ष से चिन्तन शिविरों का प्रारम्भ किया गया है। उसी क्रम का द्वितीय शिविर गत दि. २० से २२ जून २०१४ को आयोजित किया गया। शिविर स्थान ऋषि जन्म भूमि स्थित महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा रखा गया था। पूरे शिविर में मार्गदर्शन के लिए आचार्य सत्यजित् आर्य, आचार्य रामदेव शास्त्री, पं. रामस्वरूप, डॉ. कमलेश कुमार शास्त्री, श्री प्रकाश आर्य, श्री वाचोनिधि आर्य एवं श्री सुरेन्द्रचन्द्र अग्रवाल ने अपना समय दान दिया।

५. सत्यार्थप्रकाश बेचे- महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, रावतभाटा, राजस्थान के हाट बाजार स्थित बस स्टैण्ड पर आवाज लगाकर बेचे। ४० रुपये कीमत का ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश आवाज लगाकर मात्र दस रुपये में बेचा। भीड़ भरे बाजार में सत्यार्थप्रकाश लेने वाले स्त्री-पुरुषों की लाईन लग गई तथा हाट बाजार में आए शिक्षित लोगों व बस में बैठी सवारियों ने बस से उतरकर प्रसन्नता से सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ खरीदा।

६. बिस्मिल जयन्ती व सम्मान समारोह सम्पन्न- आत्मपथ मासिक पत्रिका द्वारा पं. रामप्रसाद बिस्मिल की जयन्ती के अवसर पर स्वस्ति महायज्ञ, विराट भजन सन्ध्या एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन आर्यसमाज बी-ब्लॉक, जनकपुरी, दिल्ली में किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि विधायक एवं दिल्ली सरकार के पूर्व वित्तमन्त्री डॉ. जगदीश मुखी, दक्षिण दिल्ली नगर निगम के महापौर श्री खुशीराम एवं मुख्यवक्ता प्रख्यात साहित्यकार डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया थे। कार्यक्रम का संयोजन अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने किया।

चुनाव समाचार

७. आर्य समाज रावतभाटा, वाया कोटा, राज. के चुनाव में **प्रधान**- श्री नरदेव आर्य, **मन्त्री**- श्री ओम प्रकाश आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री रमेशचन्द्र भाट को चुना गया।

८. आर्य समाज बीसलपुर, जि. पीलीभीत के चुनाव में **प्रधान**- श्री विजय कुमार, **मन्त्री**- श्री डॉ. सत्येन्द्र कुमार, **कोषाध्यक्ष**- श्री भूपराम आर्य को चुना गया।

९. आर्य समाज यमलार्जुनपुर, कैसरगंज, बहराइच, उ.प्र. के चुनाव में **प्रधान**- श्री धर्मवीर आर्य, **मन्त्री**- श्री डॉ. सत्यमित्र आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री शिवनारायण आर्य को चुना गया।

१०. आर्य समाज नकुड़, जि. सहारनपुर, उ.प्र. के चुनाव में **प्रधान**- श्री अभय सिंह सैनी, **मन्त्री**- श्री भूपेन्द्र कुमार गोयल, **कोषाध्यक्ष**- श्री हरिदत्त आर्य को चुना

गया।

११. आर्य समाज शहर बड़ा बाजार, सोनीपत, हरियाणा के चुनाव में **प्रधान**- श्री सुभाष चान्दना, **मन्त्री**- श्री प्रवीण आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री दीपक तलवाड़ को चुना गया।

१२. आर्य समाज मन्दिर, राजगढ़, अलवर, राज. के चुनाव में **प्रधान**- श्री धर्मसिंह आर्य, **मन्त्री**- श्री गोपाल सिंह आत्रेय, **कोषाध्यक्ष**- श्री कुलदीप सिंह को चुना गया।

शोक समाचार

१३. श्रीमती विश्वेश्वरी देवी कुलश्रेष्ठ पत्नी स्व. श्री लालता प्रसाद कुलश्रेष्ठ का निधन ९० वर्ष की आयु में दि. १० जून २०१४ को जोधपुर में हो गया है। उनका पूरा जीवन आर्यसमाज को समर्पित रहा। वे स्वभाव से विनम्र कर्मठ महिला थी एवं शास्त्रों व वेदों के अध्ययन में रुचि रखती थी।

१४. वयोवृद्ध विद्वान् आचार्य वेदव्रत अवस्थी सम्पादक आर्यमित्र साप्ताहिक लखनऊ की धर्म पत्नी श्रीमती शकुन्तला अवस्थी का दि. ४ जुलाई २०१४ को कुछ कालिक अस्वस्थता के बाद निधन हो गया। वे ८२ वर्ष की थी। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गयी हैं। उनका अन्तिम संस्कार वैदिक रीति से आचार्य सन्तोष वेदालंकार ने सम्पन्न कराया। ७ जुलाई २०१४ को आचार्य जी के निवास वेद मन्दिर ४७९, हिन्द नगर, लखनऊ में शान्तियज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई।

प्रतिक्रिया

आदरणीय डॉ. धर्मवीर जी, नमस्ते

पाक्षिक परोपकारी का जून द्वितीय अंक-१२ में आपका सम्पादकीय 'आर्यसमाज के लिए चिन्तन के क्षण' पढ़कर मन को बहुत ही अच्छा लगा कि आर्यसमाज के मंच से आप जैसे कर्मवीर ही यह सोचते हैं कि प्रधानमन्त्री के शपथ समारोह में आर्यसमाज का प्रतिनिधित्व सिर्फ इसलिए नहीं हुआ क्योंकि राष्ट्रीय स्तर पर हमने विद्वान् तैयार नहीं किये। जिनको संसद के केन्द्रीय कक्ष में २६/५/२०१४ शाम को आमन्त्रित किया जाता। आपसे निवेदन है कि इस बात का चिन्तन करके राष्ट्रीय-स्तर की आर्यसमाज की एक कमेटी तैयार की जाए ताकि ऐसे अवसरों पर आर्यसमाज का प्रतिनिधित्व हो सके।

- विनोद आर्य, ९५-ए, अनाज मण्डी, कालावाली, जि. सिरसा, हरियाणा-१२५२०१

आदरणीय सम्पादक जी, नमस्ते,

आपने उक्त पत्रिका के जून मास के द्वितीय संस्करण में अपने सम्पादकीय लेख 'आर्यसमाज के लिए चिन्तन के क्षण' में जो विचार प्रस्तुत किए हैं, ये आर्यजनों के लिए चिन्ता और चेतन का विषय है। प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी के शपथ समारोह में किसी भी आर्यसमाज के नेता/संन्यासी को आमन्त्रित न करना बड़े खेद की बात है। देव दयानन्द सरस्वती जिन्होंने भारत को पाखण्डवाद, मूर्ति-पूजा, गुरुड़म से मुक्त कराकर नारी शिक्षा, युवा-चरित्र निर्माण, गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति का मार्ग प्रशस्त किया, उनका एक तरह से अप्रत्यक्षित अपमान है। अब मंथन करने का समय आ गया है। विश्व हिन्दू परिषद् जो कि हिन्दुत्व का सर्वोपरि वर्चस्व रखता है, वही पुरानी सोच का ही नतीजा है।

अगर इसको हम दूसरे पहलू से देखें तो आर्यसमाज के संगठनों को भी कुछ हद तक जिम्मेदार ठहरा सकते हैं। आर्यसमाज की एक सोच, एक दिशा, एक उद्देश्य, एक लग्न अब प्रायः समाप्त हो चली है। स्वार्थ सिद्धि, वर्चश्व की होड़, अज्ञान संन्यासी (क्षमा करें), गुरुकुलीय शिक्षा का गिरता स्तर, स्वयम्भू आर्य, चार दीवारी में प्रचार-प्रसार करना इत्यादि अनेकों कारण हैं। अभी तक आर्यसमाज युवाओं की दूसरी पंक्ति भी खड़ा न कर सका। आजकल समाज को पौराणिक परम्पराओं ने इस कदर जकड़ा हुआ है कि शिक्षित वर्ग भी अन्धानुकरण करता हुआ पाखण्ड के कूप में गिरता जा रहा है।

- नन्नूराम डाँगी, सचिव, आर्यकन्या गुरुकुल ट्रस्ट, हसनपुर, पलवल, हरियाणाा-१२११०७

ऋषि उद्यान, अजमेर

लाला जगन्नाथप्रसाद रईस, फर्रूखाबाद

फर्रूखाबाद निवासी लाला जगन्नाथप्रसाद का जन्म १८९९ वि. में एक समृद्ध कुल में हुआ। जब स्वामी दयानन्द सं. १९२४ में प्रथम बार इस नगर में पधारे तो लाला जी ने उनके दर्शन किए तथा स्वामी जी के दृढ़ अनुयायी बन गये। स्वामी जी फर्रूखाबाद आकर लाला जी द्वारा निर्मित विश्रान्त (गंगा तटवर्ती घाट) पर ही निवास करते थे। स्वामी जी के आतिथ्य, निवास, व्याख्यान, शास्त्रार्थ आदि की व्यवस्था में लाला जी का पूर्ण योगदान रहता था। श्री महाराज के उपदेश से लाला जी ने विधिपूर्वक यज्ञोपवीत धारण किया। लाला जी ने वेद भाष्य निधि में ५०० रुपये प्रदान किये तथा स्वामी जी के परमपदारूढ़ होने पर परोपकारिणी सभा के प्रथम अधिवेशन में सम्मिलित होकर २००० रुपये दयानन्द आश्रम के निर्माण हेतु दिये। १० दिसम्बर १८९१ ई. को ४९ वर्ष की आयु में लाला जी का स्वर्गवास हुआ।

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

डाक टिकिट

Design@ MITTAL 9829797513